धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

Regd. No. 58414/94

स्वामी रामानन्द जी द्वारा संचालित

हमारी साधना

त्रैमासिक

वर्ष 31 • अंक 2 • अप्रैल-जून 2024

मूल्य रु. 25/-

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

करुणामयी सुमित्रा माँ

हमारी साधना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।
न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

वर्ष : 31 अप्रैल-जून 2024 अंक : 2

विरह-वेदना

तरसति जिय दरसन को तेरे।
मैं बिरहिनि ठाढ़े मग जोहउँ, जब जग जाति बसेरे।
ढरकत नैन निरन्तर गुनि गुनि, नहिं आये पिय मेरे॥
तलफत बीति रहे हैं मोकों, निसिदिन साँझ सवेरे।
कैसी करौं कहौं दुःख कासों, कठिन भये भटभेरे॥
खोज न लह्यों ढूँडि सब हार्‌यूँ, नगर गाँव बन खेरे।
यह तन भार-भयो तुम बिनु पै, जिअउँ तोर अबसेरे॥
जीवन रहत दरस है जैयो, छमि अपराध घनेरे।
'रामसरन' के हिय वसत हौ, दूरि रहो या नेरे॥

- स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'

प्रकाशक
साधना परिवार
स्वामी रामानन्द साधना धाम,
संन्यास रोड, कनखल,
हरिद्वार-249408
फोनः 01334-311821
मोबाइलः 08273494285

सम्पादिका
श्रीमती रमना सेखड़ी
995, शिवाजी स्ट्रीट,
आर्य समाज रोड
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
मोबाइलः 09711499298

उप-सम्पादक
श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'
1018, महागुन मैंशन-1,
इन्दिरापुरम,
गाजियाबाद-201014
ई-मेलः rcgupta1018@gmail.com
मोबाइलः 09818385001

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	रचयिता	पृ.सं.
1.	चित्र – करुणामयी सुमित्रा माँ		2
2.	भजन – विरह-वेदना	स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'	3
3.	सम्पादकीय		5-6
4.	भजन – गुरुदेव भगवान् के चरणों में भावपूर्ण श्रद्धांजलि	कुसुम माहेश्वरी	7
5.	भजन – श्रद्धांजलि	श्री जगदेव जी डौरली	7
6.	भजन – श्रद्धांजलि पूज्य गुरुदेव के चरणों में	सुशीला जायसवाल	7
7.	भजन – मृत्युलोक की सत्यता	योगेन्द्र पाण्डेय द्वारा प्रेषित	8
8.	भजन – श्रद्धांजलि	कान्ति सिंह	9
9.	भजन – चिर प्रतीक्षा में	श्री वासुदेव सिंह भिरवाँ	9
10.	भजन – विनय	श्री चिरंजी सिंह	10
11.	भजन – श्रद्धांजलि	डॉ. नानकराम सुन्दरानी	10
12.	गीता विमर्श – धारावाहिक	स्वामी रामानन्द जी	11-14
13.	गुरु वाणी – धारावाहिक		15
14.	Letters to Seekers – धारावाहिक		16-18
15.	भागवत के मोती – धारावाहिक		19
16.	साधना धाम की विभूतियाँ – परम पूज्य स्वर्गीय श्री सूर्यप्रसाद जी शुक्ल 'रामसरन' जीवन परिचय एवं कुछ प्रेरणादायक घटनायें – धारावाहिक		20-23
17.	श्री गुरुदेव निर्वाण दिवस साधना शिविर-2024 – विवरण एवं प्रवचन सार		24-33
18.	आम सभा की बैठक की कार्यवाही का विवरण		33
19.	कार्यकारिणी की बैठक की कार्यवाही का विवरण		34
20.	शोक समाचार		35
21.	श्रीमती सुनीति देवी के प्रति श्रद्धांजलि		35
22.	14.2.2024 से 21.5.2024 तक के 2100/- से ऊपर दानदाताओं की सूची		36-38
23.	दिगोली तपस्थली शिविर-2024 – विवरण		38
24.	स्वामी रामानन्द तपस्थली दिगोली के नवनिर्माण हेतु सन् 2022-23 व 2023-24 में एक लाख रुपये या अधिक की राशि का सहयोग देने वाले दानदाताओं की सूची		39-41
25.	बाल-साधना-शिविर-2024 (8 से 12 जून 2024) – सूचना		42
26.	श्री गुरु पूर्णिमा साधना शिविर-2024 (16 से 21 जुलाई 2024) – सूचना		43
27.	श्री मद्भागवत कथा (ज्ञान यज्ञ)-2024 (22 से 28 जुलाई 2024) – सूचना		43
28.	श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य		44

Printed and Published by Shri Dinesh Bahl for and on behalf of Swami Ramanand Sadhna Pariwar, Sadhna Dham, Sanyasa Road, KANKHAL-Haridwar (Uttarakhand) and printed at Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area Phase-I, New Delhi-110020.

सम्पादकीय

'हमारी साधना' के सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन!

हम सभी साधकगण अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि हमें एक ऐसे गुरु की प्राप्ति हुई है जिन्होंने हमें आध्यात्मिकता एवं सांसारिकता का सामंजस्य करना सिखाया है। उन्होंने हमें सिखाया है कि किस प्रकार अपने सांसारिक कर्तव्य निभाते हुए हम दिव्यता की प्राप्ति की ओर अपने कदम बढ़ा सकते हैं। किन्तु यह तभी सम्भव हो पायेगा जब हम गुरु की आज्ञा का पालन करें, गुरु के दिखाये गये मार्ग का अनुसरण पूर्ण निष्ठा के साथ करें। इसके लिये हमारा, विशेषकर दीक्षित साधकों का यह पावन कर्तव्य बनता है कि गुरु महाराज के सभी निर्देशों का पालन करें। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि गुरु ने दस निर्देश दिये हैं और उसमें से हम नौ का पालन कर रहे हैं तो हम उनकी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं, वरना दीक्षित साधकों और अन्य साधकों में कोई अन्तर ही नहीं रह जायेगा। यदि हम कोई बहाना बनाकर स्वयं को छूट देते जायेंगे तो हम धीरे-धीरे सभी नियमों का उल्लंघन करते जायेंगे और हमारा दीक्षित होना केवल दिखावा मात्र रह जायेगा।

पूज्य गुरु महाराज ने स्याही देवी मन्दिर से जो शिविरों की परम्परा जून 1943 से आरम्भ की थी उसको जीवन पर्यन्त निबाहा और अनगिनत शिविर अनगिनत स्थानों पर आयोजित किये। इन सभी शिविरों में एक बात थी जो सामान्य रूप से सभी शिविरों में लागू होती थी और वह थी कठोर अनुशासन का पालन। पाँच दिन के शिविर में भाग लेने के पश्चात् साधकगण यह सीख कर जाते थे कि किस प्रकार अल्पकाल के लिये ही सही हम अपनी इन्द्रियों पर काबू पा सकते हैं, और घर जाकर भी कुछ समय तक तो अनुशासन में रह ही सकते हैं। शिविरों के लिये गुरु महाराज ने कुछ नियम बनाये थे जिनका पालन सभी को कठोरतापूर्वक करना होता था।

इसे विडम्बना ही कहेंगे कि आज जो शिविर हम कर रहे हैं वे केवल औपचारिक रह गये हैं। कारण कि बहुत से नियमों को हमने अपनी सुविधानुसार संशोधित कर लिया है; उदाहरणार्थ –

1. आठ बजे प्रातः नाश्ते के रूप में दलिया मिलता था। यह ज़रा पतला बनता था। चीनी कुछ कम होती थी।

1. नौ बजे गीता क्लास की घण्टी बजती थी, जिसमें सब लोग एकत्र हो जाते थे और गुरु महाराज गीता पर एक घण्टा प्रवचन करते थे। कभी-कभी वे साधकों से श्लोक पढ़वाते थे और स्वयं उसकी व्याख्या करते थे। पढ़वाते इसलिये थे कि जिससे साधकों को गीता

पठन का अभ्यास हो। वे अपने इन शिविरों को प्रशिक्षण शिविर (Training Camp) कहा करते थे। साधक साधना शिविर में प्रशिक्षित हो जायें और फिर वैसा ही प्रशिक्षण दूसरों को देने में उसे भरोसा तथा सामर्थ्य उपलब्ध हो।

3. 12 बजे के भोजन में पतली दाल, सब्जी, रोटी और थोड़े चावल मिलते थे। शिविर का भोजन जहाँ एकदम निरामिष, सात्विक, कम नमक का तथा मिर्च-मसालों रहित होता था, वहीं स्वामी जी भोजन कुछ कम लेने पर ज़ोर दिया करते थे। अधिक भोजन से आलस्य उत्पन्न होता है, प्राण मोटा होता है और भजन-साधन अच्छी तरह प्रगति नहीं करता। भोजन में जो अधिक लालच रखते थे, महाराज उन्हें इशारे से मना करते थे (अर्थात् भोजन करते समय बोलने की अनुमति नहीं थी)।
4. शिविर में सबको कुछ न कुछ सेवा कार्य करना होता था।
5. शिविर में बीड़ी, सिगरेट तक पीने की मनाही थी। चाय-पान निषिद्ध था, शिविर के भोजन के अतिरिक्त किसी प्रकार के भोजन की अनुमति नहीं थी।
6. शिविर में मिले भोजन के इलावा कोई पदार्थ चाहे इलायची सौंफ इत्यादि ही हो, सेवन करना वर्जित था। औषधि भी खाने की स्वीकृति शिविर-संचालक से लेनी होती थी।
7. शिविर में मिले भोजन के अलावा घर की मिठाई, टोस्ट, मक्खन, बिस्कुट, फल इत्यादि कोई वस्तु लेना संयम के विरुद्ध होता था।

इस प्रकार शिविरों में प्रभु-जीवन जीने की तैयारी कराई जाती थी। स्वामी जी कहा करते थे कि यहाँ से जाने के बाद अपने घर भी जितना सम्भव हो इसके अनुकूल दिनचर्या, भोजन आदि करने का अभ्यास करना।

उपर्युक्त जानकारी 'स्वामी रामानन्द चरितसुधा' से उद्धृत की गई है, जो इसकी प्रामाणिकता सिद्ध करता है। हम सभी साधकों का कर्तव्य है कि इन सभी नियमों का पालन स्वमेव करें। विशेष उत्तरदायित्व है संचालकों का जिनको चाहिये कि पहले स्वयं इन नियमों का पालन करें और उसके बाद औरों से करवायें।

सुधी पाठकों से नम्र निवेदन है कि उपरोक्त कथन पर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य व्यक्त करें जो आगामी पत्रिका में छापी जायेंगी।

प्रतिक्रिया व्यक्त करने अथवा अन्य सुझाव देने के लिए कृपया पृष्ठ 3 पर दिये गये सम्पादक अथवा उप-सम्पादक के पते का प्रयोग करें।

राम राम जी!

धन्यवाद!

गुरुदेव भगवान् के चरणों में भावपूर्ण श्रद्धांजलि

गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
इस जीवन के करतार तुम्हीं
मेरे प्राणों के आधार तुम्हीं।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
तेरी ज्योति से प्रकाश हुआ
मन मन्दिर में उजियार हुआ
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
तू हर पल हमें सिखाता है
निज दर्पण हमें दिखाता है
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
यह परम अनुग्रह है मेरा
हर पल गुरु सुमिरन हो तेरा
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
भावों की माला अर्पित है
श्रद्धा के कुसुम समर्पित हैं
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

– कुसुम माहेश्वरी

श्रद्धांजलि

प्रेम की ज्योति जगा दे मैय्या,
प्रेम की ज्योति जगा दे।
तन मन को मेरे निर्मल कर दे,
हृदय को विश्व प्रेम से भर दे।
अहं भाव को मिटा के मैय्या,
प्रेम का भाव जगा दे।। .....
जग में सब कुछ तेरा जानूँ
सारे नाते तुझ से मानूँ।
इस सृष्टि के कण-कण में,
मैय्या अपना रूप दिखा दे।। .....
द्वेष भाव से मन है काला,
निज प्रकाश दे करो उजाला।
बुद्धि का तम हर कर मैय्या,
ज्ञान की ज्योति जगा दे।। .....
चित हो राम चरण का चेरा,
पूर्ण रूप से हो जाऊँ तेरा।
चंचलता सब मिटा के मैय्या,
अब तो शान्त बना दे।। .....

श्री जगदेव जी डौरली

श्रद्धांजलि पूज्य गुरुदेव के चरणों में

श्रद्धा सुमन समर्पित हैं
गुरुदेव आपके चरणों में
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
मैं पापी अधम कुकर्मी हूँ
पर तेरी हूँ बस तेरी हूँ
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
तुमने अधमों को भी तारा है
मुझको भी तेरा सहारा है
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
मैं जहाँ कहीं भी जाती हूँ
पा तुझे बहुत हर्षाती हूँ
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
तुमने हम सबको थामा है
यह जीवन धन्य हमारा है
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

– सुशीला जायसवाल

मृत्युलोक की सत्यता

वो देखो जल रही चिता है मरघट में धू धू कर।
कहाँ गये वो महल चौबारे शय्या के आडम्बर।।
जनक और जननी के चुम्बन त्रिया के आलिंगन।
पुलकन भरी बहन की राखी भैया के अभिनन्दन।।
पीर पड़ोसी परिजन पुरजन इतना ही कर पाये।
श्वांस निकल गई जब शरीर से मरघट तक ले आये।।
बड़े नगर, बड़े बाप के बहुत बड़े बेटे हैं।
मगर आज लकड़ों के नीचे चुपचाप चित्त लेटे हैं।।
सह न सके सिरदर्द मगर उपचार बहुत करवाये।
बड़े-बड़े धन्वन्तरि के कल कौशल काम न आये।।
हंस उड़ा तो पिंजरे की भी कीमत खो जाती है।
इसी जगह दीवाली की बेरंगी होली जल जाती है।
किसी कवि ने इस काया को कंचन काया नाम दिया।
मानो उसने हम पर व्यंग्य बहुत भीषण किया।।
क्योंकि स्वर्ण-भस्म भी बाजारों में ऊँचे दामों में बिकती है।
मग़र राख कंचन काया की उड़ी-उड़ी फिरती है।
राख देखकर पता न चलता नारी की या नर की है।
या यह किसी मासूम की या दाता या नाहर (सिंह) की है।
दाने तीन चबाने वाले भी इसी किनारे आते हैं।
ध्वजा पताका लहराने वाले भी इसी घाट पर आते हैं।।
बिना कफ़न मर जाने वाले भी मरघट पर ही आते हैं।।
इसीलिये कहता हूँ प्यारे घर के दरवाज़े से लेकर मरघट तक की दूरी।
इसको मापन करने में तूने तो उम्र लगा दी पूरी।।
इसीलिये तो कहता हूँ कि राम नाम ही सत्य है,
हरि का नाम ही सत्य है।
यह शरीर क्षणभंगुर है और आत्मा अज़र अमर
चेतन, शाश्वत ही है।
जय श्रीराम समर्पणमस्तु

– **योगेन्द्र पाण्डेय** द्वारा प्रेषित

श्रद्धांजलि

हे सतगुरु तुम बड़े निराले
करते हम बच्चों की रखवाली
काम क्रोध मद लोभ को हर के
भक्ति अमिय रस पान कराते
हे सतगुरु तुम बड़े निराले।

हम सब साधक प्रेम से भरकर
गुरु दर्शन का लाभ उठाते
अपनी अपनी भावांजलि समर्पित करते
हे सतगुरु तुम बड़े निराले।

आपके वचनों को सुन करके
पावन प्रेम आपका पाकर
हम सब साधक धन्य हो जाते
हे सतगुरु तुम बड़े निराले।

कठिन मार्ग अवरुद्ध बड़ा था
पावन प्रेम से सिंचित करके
अन्तरतम में ज्योति जगा दे
जीवन जीना सरल बनाते
शक्ति मार्ग पा साधन पथ का
जीवन अपना धन्य बनाते
सतगुरु प्यारे बड़े निराले।

– कान्ति सिंह

चिर प्रतीक्षा में

टिमटिमाता हुआ दीप जलता रहेगा।
सजी आरती जो तेरी अर्चना को,
तूफानों के झोकों में पलता रहेगा।
टिमटिमाता हुआ .....

पलक पाँवड़े को बिछे नैन भीगे,
धूमिल सी पथ को निहारा करेंगी।
भले भूल जाओ समाधि लगाकर,
प्राणों की हलचल तो पुकारा करेंगी।
भले तुम न आओ मेरे मन के मन्दिर;
विकल राग वीणा के तारों पर लेकिन,
गुनगुनाता हुआ गीत बजता रहेगा।
टिमटिमाता हुआ .....

रहोगे भला ऐसे कब तक नचाते,
जरा मुस्कराओ तो मिलता सहारा।
निराशा से चंचल है मन ये भटकता,
फिसलने लगा है अब राही बेचारा।
उठी टीस उर में मचलने लगी है;
अरे प्राण मन को पागल बनाकर,
भला ऐसे कब तक छलता रहेगा?
टिमटिमाता हुआ .....

कहीं हो न ऐसा किनारा मिले ना,
निराशा से टक्कर लड़े फूट जायें।
ठंडी सी सांसें भरे देख मंजिल को,
आशा की कड़ियाँ वहीं टूट जायें।
मेरे देव! आओ हृदयावलम्बन!
सूना सा मन्दिर है छाया अंधेरा,
भूला सा कब तक बहलता रहेगा?
टिमटिमाता हुआ .....

श्री वासुदेव सिंह भिरवाँ

विनय

जगत पिता परमात्मा, परमधाम श्री राम।
श्रद्धा सहित गुरुदेव को, नत मस्तक प्रणाम।।
दया कर देव तुम आये, बन किंकर का सहारा तुम।
बहती नाव दरिया के, बने आकर किनारा तुम।।
पड़े गफलत में सोते थे, कुछ भाग्य को अपने रोते थे।
दरिया-ए-ग़म में बहते थे, आप पकड़ के बाँह उभारा तुम।।
कृपा के हम भिखारी हैं, दया के आप भण्डारी हैं।
इसी आशा-भरोसे से, कराया है गुज़ारा तुम।।
निर्मल प्रेम अविरल भक्ति, दो दयामय दिव्य शक्ति।
रहे चरण कमल में पुनीत रति, करो जीवन सफल हमारा तुम।।
डगमग यह पग चलते रहें, राह दिखाई हुई पर जमते रहें।
शीश नित्य प्रति चरणों में झुकते रहें।।
अति करुणा से हमको निहारा तुम।

श्री चिरंजी सिंह

श्रद्धांजलि

गुरुदेव तेरी भक्ति का, दिल में आधार है।
और तेरे ही चरणों में मेरा अतुल प्यार है।।
अपना प्रेम देकर तूने मेरा मन मोड़ लिया,
अपने ही चरणों की भक्ति में मुझे जोड़ दिया।
लगा तेरे संग मेरे, हृदय का तार है।।
भटक रहा था मैं, तंग किया मोह माया,
मिली तेरे चरणों में ही, बालक को निर्भय छाया।
पाया तेरा सहारा, मुझ पर बड़ा प्यार है।।
मन में है अब आस तेरी, दर्शन की प्यास तेरी,
हृदय में जग रही है, प्रेम की प्यास तेरी।
तेरे बिन चहुँ ओर, न मेरा कोई पार है।।
स्मरण ध्यान तेरा, बल अरु विश्वास तेरा,
स्वामी तू है मेरा, मैं हूँ दास तेरा।
तेरी ही दया से, बेड़ा मेरा पार है।।
गुरुदेव तेरी भक्ति .....।।

डॉ. नानकराम सुन्दरानी

गीता विमर्श

अध्याय 6

पाँचवे अध्याय में **'यति', 'यतचेतसाम्', 'यतात्मनाम्', 'यतेन्द्रियमनोबुद्धिः',** ऐसे शब्दों के प्रयोगों की भरमार है। अन्तिम श्लोक तो संयम का और ही रूप दिखाते हैं। समाधि का, प्राणायाम का और ध्यान का वर्णन करते हैं। स्थितप्रज्ञ होने के लिये संयम आवश्यक है, यह हमने जाना ही था। ज्ञान के मार्ग से चलते हुए निर्गुणब्रह्म में लीन होने के लिये भी संयम आवश्यक है, यह भी पता चलता है पिछले अध्याय से। वस्तुतः आरोह के मार्ग की आधारशिला ही संयम है। वर्तमान अध्याय उसी का विवेचन करता है। संयम को समझने की चेष्टा में यदि हम विशाल दृष्टि को, जो विकास की है, खो देंगे तो हम उसे ठीक न समझ पायेंगे। संयम और जीवन अलग-अलग हो जायेंगे, एक दूसरे का प्रतिरोधी दीखने लगेगा। उसके परिणामस्वरूप या तो संयम असम्भव हो जायेगा, या यदि संयम होगा तो जीवन का सहज प्रवाह रुक जायेगा। जीवन एकांगी और क्षुद्र हो जायेगा, सूखे हुए ठूंठ की तरह।

इस चेतावनी का स्मरण रखते हुए हम इस अध्याय को आरम्भ करते हैं और बातों की विशद चर्चा प्रसंगानुसार होगी ही।

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः॥1॥

'जो कर्मफल के आश्रित न होकर, करने लायक काम को करता है वह संन्यासी और योगी है। वह (संन्यासी और योगी) नहीं जिसने अग्नि का परित्याग किया है, या कर्म का परित्याग किया है'॥1॥

पिछले अध्याय में कर्म के विषय में जो समझाया था वह यहाँ फिर से साररूप में कह दिया गया है। चाहे किसी भी रास्ते पर चलो, कर्म तो करना ही होगा। सांख्य-योगी भी कर्म करता है और कर्मयोगी भी करता है। वास्तव में निष्ठा के भेद से उनके कर्म करने में कोई भेद नहीं होता। सांख्ययोगी भी तो कर्म के बिना रह नहीं सकता। कोई भी नहीं रह सकता बिना कार्य किये।

कैसे काम करते हैं दोनों मार्गों के साधक? कर्म-फल के आश्रित नहीं होते। फल के लिये काम नहीं करते और गहराई में जायें तो, न कर्म के आश्रित होते हैं और न फल के। जो कर्म से आसक्त होता है – कर्म के करने के द्वारा सुख की लालसा रखता है – वह कर्म के आश्रित हो जाता है। वह कर्म के अभाव में परेशान होता है। जो फल के आश्रित होता है वह फल की अप्राप्ति में परेशान होता है। यह कसौटी है। दोनों ही (संन्यासी तथा कर्मयोगी) – निराश्रय होकर कर्म करते हैं।

फिर वह कर्म क्योंकर करते हैं? कैसे करने योग्य कर्म को जान पाते हैं? **'कार्यं कर्म करोति यः'** जो करने योग्य कर्म को करता है। जीवन की परिस्थितियाँ बताती हैं हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। जब तक भीतर लालसा-फलेच्छा रहती है, तब तक वास्तव में हम करणीय-अकरणीय को जान नहीं पाते। इच्छा ही हमें हांकती है, कर्त्तव्य-बुद्धि नहीं। जब फलेच्छा समाप्त होती है, तो प्राप्त कर्म सहज हो जाता है। सामने आने वाला काम जो होने को है, उसके लिये हाथ-पाँव चलते हैं। उसके पीछे कोई संकल्प नहीं रहता, कोई हड़बड़ाहट नहीं रहती। वह काम बिना तनाव के होता चला जाता है।

सच्चे संन्यासी और योगी का यही लक्षण है। वह दोनों ही न काम से डरते हैं और न उसके लिये हड़बड़ाते हैं। न पकड़ने की लालसा रहती है, न छोड़ने की आकांक्षा। कर्म सहज व्यापार होता है।

'अग्नि' वह अग्नि है जो गृहस्थी लोग विवाह

के समय पाते थे और आजीवन रखी जाती थी। उसी अग्नि में देवताओं के लिये आहुतियाँ दी जाती थी; उसी में उनके लिये प्रसाद बनता था। अन्त में उसी अग्नि में उनकी देह भस्मीभूत होती थी। अत: 'अग्नि' पंचमहायज्ञ बलि-वैश्वदेवादि गृहस्थ के आवश्यक कृत्यों का सूचक है। जो व्यक्ति गृहस्थ को छोड़कर संन्यास लेता था, वह इस 'अग्नि' को छोड़ देता था। उसके साथ ही देवकृत्य तथा पितृकृत्य छूट जाते थे। संन्यासी निरग्नि होता है।

'निरग्नि संन्यासी नहीं होता, योगी नहीं होता।' संन्यासी वह है जिसके भीतर से कर्मबन्धन छूटा है, जिसने अपने अकर्तापन को पहिचाना है और जीवन में कर्त्तव्य की निष्ठा को जागृत किया है। इस भीतर के त्याग के बिना तो संन्यास निरर्थक है। अत: संन्यासी का संन्यासीपन इसमें नहीं कि उसने अग्नि को छोड़ा है। अग्नि को छोड़ने पर भी तो भीतर से त्याग नहीं होता। 'अग्नि' के न छोड़ने पर भी समुचित निष्ठा से देवपितृकृत्य करने पर संन्यास हो सकता है। अत:, संन्यास में कारण कृत्यों का परित्याग नहीं, आन्तरिक-ज्ञान की निष्ठा है। संन्यासी वह है जिसमें सांख्य की दृष्टि जगी है। वह संन्यास में कारण है।

'अक्रिय:' बिना क्रिया के। जो निकम्मा है सो अक्रिय है। खाली पड़ा व्यक्ति, कुछ उपयोगी काम न करने से संन्यासी नहीं होता। संन्यास लेने वाले को तो कुछ भी करना नहीं होता सिवाय अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के। भिक्षा मांगनी होती है। यहाँ समझने की बात है कि अक्रियता से संन्यास नहीं होता। यदि भीतर समझ नहीं तो भिक्षा मांगने के कर्म से भी बन्धन होगा। सांस लेने से और खाना खाने से भी बन्धन होगा।

'स संन्यासी च योगी च', 'वही संन्यासी है और वही योगी है'। वह दोनों अलग-अलग नहीं हैं। जो संन्यासी है सो ही योगी है। जिससे वास्तव में संन्यास होता है उसी से योग भी होता है। दोनों में समांश है कर्मफल के आश्रित न होकर कर्म करना।

आगामी श्लोक इसे स्पष्ट कर देता है।

यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन॥2॥

'जिसे (लोग) संन्यास कहते हैं उसे अर्जुन तुम योग जानो (क्योंकि) निश्चित ही बिना संकल्प का संन्यास किये कोई योगी नहीं हो सकता'॥2॥

पिछले श्लोक में बताया था कि संन्यासी योगी होता है। क्योंकि वह भी कर्मयोगी की भाँति फलाकांक्षा से रहित होकर कर्म करता है और संन्यासी का संन्यासीपन, अग्नि-परित्याग अथवा कर्म-परित्याग में नहीं रहता। वर्तमान श्लोक में उसके विपरीत और बताते हैं कि योगी भी तो संन्यासी होता है।

वर्तमान श्लोक का पूर्वार्ध तो पिछले श्लोक की युक्त (स्थिति) का सार स्पष्ट शब्दों में प्रकट करता है 'क्योंकि ऐसा है, इसलिये जिसे लोग संन्यासी कहते हैं उसे तुम योगी समझो'।

अपरार्ध दूसरी बात बताता है। योगी कैसे संन्यासी है? क्योंकि बिना संकल्प का 'संन्यास' किये कोई योगी हो ही नहीं सकता। कर्म-योग के रास्ते पर चलने के लिये संकल्प तो छोड़ना ही होगा। कौन सा संकल्प छोड़ना आवश्यक होता है कर्मयोग के मार्ग पर?

चतुर्थ अध्याय, श्लोक 19 में कहा था – 'जिसके सभी समारम्भ काम-संकल्प से रहित होते हैं', अत: काम-संकल्प का परित्याग आवश्यक है, कामना के आश्रित संकल्प। अहं की तृप्ति कामना के द्वारा होती है। वह अपनी तृप्ति के लिये ताना-बाना बुनता है, 'मैं ऐसा करके यह पा लूंगा, उससे यह होगा और फिर मैं यह बन जाऊँगा'। जो इस प्रकार की इच्छा को लेकर होने वाले संकल्प हैं उन सबका परित्याग होने से ही कर्मयोग के पथ पर आरूढ़ हुआ जाता है। अन्यथा व्यक्ति फलाशय में उलझ जाता है। कार्य-कर्म को करना होता है, भविष्य के विषय में बिना सोचे हुए।

अतः, बिना त्याग के योग नहीं होता। इच्छा का त्याग करना होता है योगी को। फलाकांक्षा छोड़नी होती है। इसलिये योगी संन्यासी है।

भगवान् कैसा खेल खेलता है। संन्यासी को योगी बताते हैं और योगी को संन्यासी। दोनों मार्गों में समान बातें भी तो हैं। वह नितान्त भिन्न नहीं है। इसीलिये तो दोनों एक ही गन्तव्य स्थल पर ले जा सकते हैं। अन्यथा यह सम्भव न हो।

संयम की उपयोगिता दोनों ही मार्गों में है। उसे साधने के लिये विवेक का ही आश्रय प्रधान रूप से लिया जाता है। यह कर्म की विशुद्ध निष्ठा के विषय में ही सत्य है। जो भक्ति-प्रधान कर्मनिष्ठा है उसमें तो संयम गौण होता है। वास्तव में वह सधता चला जाता है स्वतः ही। प्रभु-चरणों की रति सभी आकर्षणों को समाप्त कर देती है।

आगामी श्लोक साधक के लिये रास्ता दिखाते हैं। जो घाटी उसे पार करनी होती है, उसके लिये सुझाव देते हैं।

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।
योगारूढ़स्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते॥ 3॥

'जो मुनि योगमार्ग पर चढ़ना चाहता है उसके लिये कर्म साधन कहा जाता है। योगारूढ़ हो जाने पर उसके लिये ही (आगे चलने के लिये) शम साधन कहा जाता है'॥ 3॥

योगमार्ग में अवस्थाओं का भेद बताते हैं। यहाँ कर्मयोग के, समता के योग के मार्ग की चर्चा है। इस रास्ते पर आने के लिये कर्म साधन है। कर्म के बिना व्यक्ति इस निष्ठा को लाभ नहीं कर सकता। 18वाँ अध्याय इस विषय में स्पष्ट रूप से बताता है। 46वें श्लोक से कर्म की चर्चा आरम्भ होती है। 49वें श्लोक में नैष्कर्म्य की परम सिद्धि का वर्णन किया गया है। 'जिससे भूतों की प्रवृत्ति है, अपने कर्म के द्वारा उसकी उपासना करके व्यक्ति सिद्धि को लाभ करता है।' यह सिद्धि योगारूढ़ हो जाना है, नैष्कर्म्य की अवस्था को लाभ करना है जिसमें कर्म करने से नये संस्कार नहीं बनते, अपितु पुराने क्षीण होते चले जाते हैं।

'कारण' शब्द का प्रयोग साधन के अर्थ में हुआ है। जो करता है, जिसके द्वारा करवाया जाता है, वही तो कारण होता है। वही साधन होता है, जो साध देता है। योगमार्ग पर चढ़ जाने की चाह वाला 'आरुरुक्षुः' होता है। अतः जो इस मार्ग में प्रवेश चाहता है उसे स्वधर्म का पालन करना होगा। बिना इसके रास्ता नहीं मिल सकता।

बिना कर्म किये व्यक्ति के भीतर ठोसपन नहीं आता, गहराई नहीं आती, सन्तुलन नहीं आता। बिना समुचित निष्ठा से कर्म किये व्यक्ति निर्मल नहीं हो पाता। कई लोगों को आत्मनिर्माण विषयक साहित्य पढ़ने का बहुत शौक होता है। एलन मार्डन आदि लेखकों के ग्रन्थों को खूब पढ़ते हैं।* स्वामी रामतीर्थ तथा विवेकानन्द के साहित्य का अध्ययन होता है, परन्तु उनके जीवन में कुछ भी बदलाव नहीं दिखाई पड़ता। वह अध्ययन काल्पनिक जगत् में उड़ानें भरना सिखा देता है। इसके विपरीत जिन्होंने कर्त्तव्य-परायण होकर चार साल व्यतीत किये हैं, वह मंज जाते हैं। उनके संकल्प में बल आता है। चरित्र में गम्भीरता आ जाती है। यदि ऊँची निष्ठा से कर्म किया जाये तो व्यक्ति वास्तव में कर्म के रहस्य को पा जाता है। वह कर्म करता हुआ अकर्ता रहता है। उससे बन्धन नहीं होता। बिना काम किये ज़बानी जमा खर्च से अध्यात्म का मार्ग पाया नहीं जाता। पुराने समय में गुरुजन शिष्यों से वर्षों आश्रम में रखकर सेवा लेते थे। वह ऊँची साधना होती थी जो उन्हें निर्मल कर देती थी। फिर वह पथ से डिग नहीं सकते थे।

आज इस बात के महत्त्व को न समझकर कि अध्यात्म तो जीवन के प्रति मूलतः एक निष्ठा है, लोग क्षणिक अद्भुत अनुभूतियों के लिये लालायित होते हैं। जीवन में अध्यात्म को स्थापित करने की बजाय ध्यान के मार्ग में अग्रसर होना ही सभी कुछ समझा जाता है। ध्यान का मार्ग तो समय पाकर

चलेगा ही। उसमें प्रगति भी होगी ही। उसके लिये उतावलापन क्यों? जीवन को ठीक समझो। जीवन और कर्म के प्रति, जीवन के स्वामी के प्रति समुचित निष्ठा बनाओ। तब गाड़ी वेग से आगे चलेगी। निष्ठा भी कर्म करने से बली होती है और बली हुई निष्ठा रास्ता खोलती चली जाती है। परन्तु इसका महत्त्व नहीं समझा जाता। जैसे आज सभी कामों में जल्दी की मांग है वैसे ही अध्यात्म में भी। परन्तु हम अपने को धोखा नहीं दे सकते। हमें कीमत देनी ही पड़ती है। जो काम हम पहले करने को तैयार नहीं होते वह बाद में करना पड़ता है। समझ आ जाती है इस बात की यद्यपि बाद में।

योगारूढ़ होने पर आगे बढ़ने के लिये कर्म का प्रभाव गौण हो जाता है। फिर 'शम' मन की शान्ति, मन को शान्त करने के साधन आवश्यक होते हैं। नैष्कर्म्य-स्थिति को लाभ कर लेने वाला योगारूढ़ कहलाता है। 18वाँ अध्याय फिर देखें।

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा॥ 50॥
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च।
शब्दादीन्विषयान्स्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च॥ 51॥

सिद्धि को प्राप्त हुआ व्यक्ति जैसे ब्रह्म को प्राप्त करता है सो मुझसे संक्षेप से ही जानो, वह (ब्रह्म) जो ज्ञान की परा निष्ठा है॥ 50॥

विशुद्ध बुद्धि से युक्त हुआ, धृति से अपने को वश में करके, शब्दादि विषयों का त्याग करके, रागद्वेष को छोड़कर॥ 51॥

यह प्रसंग मन की शान्ति के, चित्त को निश्चल करके, समाहित होने के उपाय बताता है। यह सभी मिलाकर शम कहे जाते हैं। इस शम का परिणाम होता है –

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति॥18/54॥

'ब्रह्मभाव को प्राप्त, निर्मलात्मा वाला, न शोक करता है, न इच्छा करता है।'

योगारूढ़ हुआ व्यक्ति 'शम' के साधन के द्वारा ब्रह्मभाव को लाभ करता है।

क्या कर्मयोगी के लिये भी यह 'शम' का साधन आवश्यक है। गीता के अनुसार तो एक अवस्था में आवश्यक है, परन्तु वह भी सदैव के लिये नहीं, कुछ समय के लिये ही। भीतर निश्चल हो जाने पर, ब्रह्मभाव के उपरान्त पराभक्ति जगती है, जिससे समर्पण हो जाता है, प्रवेश होता है। उसके उपरान्त कहा है वहीं पर –

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्॥ 18/56॥

'सब काम करता हुआ भी अव्यय पद को लाभ करता है।' अतः यह शम का साधन थोड़े ही समय के लिये है। कर्म करते हुए भी व्यक्ति इस साधन को साथ-साथ चलाता है। जब व्यक्ति इस योग्य हो जाता है, तो परिस्थिति भी वैसी बन जाती है। साधन जुड़ जाते हैं। एकान्त बैठने के लिये अवसर तथा स्थानादि भी प्राप्त हो जाते हैं। शम के साधन के लिये भी जंगल में जाना तो आवश्यक नहीं। घर में भी एकान्त मिलता है। काम करते हुए भी प्रभु का चिंतन होता ही है और यदि कुछ थोड़े समय के लिये अलग रहना भी पड़े तो क्या बड़ी बात है। काम करते-करते आराम की भी तो कभी आवश्यकता होती है। परन्तु कर्म के परित्याग की आवश्यकता नहीं, अथवा ब्रह्मभाव के लाभ होने के बाद, या प्रवेश पाने के बाद कर्म हो नहीं सकते, ऐसा नहीं है, यह भगवान् की ऊपर उद्धृत उक्ति से स्पष्ट है। ऐसा ही वास्तव में ज्ञानमार्ग में भी होना चाहिए। समझ आने पर तो क्या पकड़ने को रहता है और क्या छोड़ने को? सहज कर्मों का सिलसिला चल सकता है। जो 'स्थिति' कर्म करने पर समाप्त हो जाती है वह वास्तव में स्थिति ही नहीं है। ब्रह्म तो कर्म-अकर्म में समानरूप से व्याप्त है। उसमें स्थिर होने पर तो कर्म बाधक हो नहीं सकता। हाँ, मनोगत अवस्थाओं में कर्म करने से अवश्य अन्तर हो सकता है। (क्रमशः)

गुरु वाणी

काम सभी मंगलमय हैं, बस वह भगवान् के अर्पण हो जाना चाहिए। यदि पूजा का भाव बना रहे तो कर्म भगवान् को ही प्राप्त होते हैं। जो कुछ फलस्वरूप हो उसे भगवान् का प्रसाद-मात्र समझना चाहिए। (पत्र 73)

❖ ❖ ❖

एक बार मनोमालिन्य होने पर उसे सुधार सकना बहुत वीरता की, त्याग तथा अगाध प्रीति की आवश्यकता रखता है। अपने अहं को, अपने मान को जब तक मिटाने के लिये व्यक्ति तैय्यार ही न हो और अपनी रसना को पूर्णरूपेण मधुमयी न कर दे, तब तक सफलता होनी असम्भव है। आध्यात्मिक पथ के पथिक के सामने ऐसे अवसर परीक्षा रूप में आकर खड़े होते हैं। यदि इनके इस स्वरूप को समझ कर वह चलता है तो उसकी उन्नति अतीव वेग से होती है और यदि साधारण व्यक्तियों की तरह तू-तू मैं-मैं की लीला करता है तो वह उससे ऊपर उठ नहीं सकता। (पत्र 75)

❖ ❖ ❖

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः॥

- चैतन्य महाप्रभु

यह आदर्श भक्त के सामने रहता है। 'तृण से भी नीचा अपने को कर दे और वृक्ष की तरह सहनशील हो। स्वयं अमानी, परन्तु दूसरों को मान दे। ऐसे भाव में स्थित भगवान् का स्मरण कीर्तन करें।' (पत्र 75)

❖ ❖ ❖

अदले का बदला – वाली भावना मनुष्य को गिराती है। 'जो मैं करूँगी, कहूँगी और विचारूँगी उसके लिये मैं देनदार हूँ, जो अन्य करेगा उसके लिये वह – यह सीधा साफ हिसाब है। (पत्र 75)

❖ ❖ ❖

अपनी आदतों को बदलने के लिये आवश्यक है – दृढ़ संकल्प और उसको पूरा करने के लिये त्याग के लिये उद्यत रहना। प्रायश्चित्त तथा क्षमायाचना – मान मिटाने के लिये बड़े गुणकारी हैं। (पत्र 75)

❖ ❖ ❖

Letters to Seekers

Letter No. 18 : Shri Ram : P.O. Loharkhet,

Distt. Almora.

11.10.1944

My dear .....,

I am on my way back from the Pindari Glacier. All the three letters of yours dated 1st, 2nd and 3rd of October are before me. I left Almora on the 2nd, hence this long gap.

The Gita classes must have been held by now, both of them I suppose. So I am in no hurry to write just now.

'Two hourly terms' means two terms of an hour each. That was the procedure followed in the Akhand Jap that took place in my presence at Agra. You seem to have misunderstood the term as two hourly term.

I do not know what Aurobindo says about the मर्यादा aspect of Ram. You are in a better position to pronounce judgement on Mahatma Gandhi Jee. You know him better than I do.

Your second letter deals with the eulogy of Mahatma Gandhi. I am really pleased to learn the great aspiration that you have for Mahatma Jee. If we are worthy of the ideal we adore, we need not make effort to bring others round to our own viewpoint. It is enough by itself. May the Lord fill you with Gandhian life. Next point is about the Tulsi Ramayana and the Kalyan school of thought. To be frank I can not be at one with the latter, though I am not offended by it or pick quarrels with it. That aspect of Ramayana has gradually (and is gradually) passing out of my vision. We are to learn to focus our attention and that of others on the vital points. Even in the Gita, we have to explain the Yajna (यज्ञ) in our own way. What if we are to explain away or ignore certain things in the Ramayana.

'Kaliyuga' of Tulsidas is the Kaliyuga of the पुराण. The present theory of evolution deals only with physical aspect of creation and it does not extend to sufficiently long durations of time to include cycles of creation. I shall write about this some time later.

Your letter of the 3rd October is peculiar. First about place for meditation. Meditation done singly and Akhanda Japa are two different things. In Akhand Japa we propose to have the fullest benefit of the vibrations that we produce and their echoes. This is possible under the conditions laid down by me. You may try, if you like.

Secondly, you enquired about OM nama. Every house holder may have a milk cow, but I have to do with the one that I have. The proof of the pudding lies in the eating thereof.

Because it has been sung of early ages, therefore this is the best. I do not see reason behind it. That which works, that which is in my possession is the best to me. (The name is a mantra, it has a potency and it works in a particular way; if you are ready to believe it). Now about universality of the Sadhna of Rama Nama. Will you give up eating wheat bread because all can not have it? In our race for universality, we are apt to lose the substance and run after the shadow. Do I carry on my shoulders the burden of whole humanity. Even my burden is carried by Him. Where is universality? Diverse temperaments, diverse ways, diverse evolution? If one has the eyes, he can see the One and all, diversity sinks into it, but not till then. It is merely talk till then.

If a musalman brother comes to me for the higher course in spirituality, I will give him Ram Nama and if he can not swallow it, the Lord will show him another door where his thirst can be quenched, if he is really thirsty. That is all that the Lord has given me and I am content to have it. This fulfils all my needs and aspirations. How can I look elsewhere?

My Rama is not the Rama of Valmiki or Tulsidas. Rama is that which pervades all (रमता). My Rama is आराम Perfect Bliss. My Rama is the one from whom emanates all that sages adore and of which the Vedas sing.

Spirituality – I mean the higher course – is only for those that have come up to a certain stage of evolution. To attempt to give the High School lessons to the primary students is useless. In due course they will qualify for it.

Please recognise that there is the Lord above who looks after you and looks after the world. Be as a child unto him. Sing His name.

Leave His problems to Him and your own as well. You will have the soundest sleep, free from care, absolutely.

Yours in the Lord,

Ramanand

❖ ❖ ❖

Letter No. 19 : Shri Ram : Talla Dania, Almora.

24.10.1944

My dear .....,

Yours of the 17th and 21st instant to hand. I hope the required comments on the verses 5 to 8 of the 4th chapter are with you by now. I am really sorry for the delay that has been caused, but it was wholly unavoidable. We reached back on the 15th. 16th was

Dewali and I was busy. Therefore I wrote out the comments. The rest of the delay was due to transit.

I am leaving the hills on the 29th instant. I shall try my level best to squeeze out about a week for Agra before the Christmas. Another visit I shall pay when I return from Punjab. I am really obliged to you for the frankness with which you have been approaching me. As to my reply to your letters of the 1st, 2nd and 3rd instant, it was written wholly from the point of benefiting you. At the present stage it will be extremely harmful for you in your sadhna to try to take apart the threads of the very basis of your sadhna. Get ahead with the working basis. A time will come when you shall have the vision to tackle broader questions of leading others on to His feet.

I quite appreciate your view point that Mohammedans and Christians may not at all like to take the name. But spirituality leaves far behind the limitations of so called religion and the possibility of sectarian feuds. Spiritualists all belong to one religion, the religion of God. Moreover, if there is a real aspirant of another religion who feels really attracted towards the person, the Lord will show a way suitable to him even through this person. It is the descent of the Mahashakti which is the main thing and by His Grace this can be called upon a receptive aspirant inspite of the outer form of the sadhna being altogether different. It is the Higher Will which works through a master in doing so, not his personal will. No laws can be laid down about it.

Need I repeat that I cut short the topic mainly for your sake. Hope you have already received another letter from me by this time and that your difficulty about the name has been resolved. Now that the road is clear before you, you will do well to direct your energies in that channel.

You will do well to continue Dr. Sircar's treatment. It is no wonder if the disease should take a long time to get cured.

We are having some public programme here for 4 days. The subject for today is शक्तिमय जीवन.

When you sit for japam, now try to concentrate in your heart centre, the cardiac plexus which is situated in between the ribs. It is commonly called कलेजा. Use no force. Let is be done spontaneously.

Yours in the Lord,

Ramanand

❖ ❖ ❖

भागवत के मोती

गत वर्ष के अप्रैल अंक से पत्रिका में श्रीमद्भागवत के चुने हुए सन्देश छपने आरम्भ हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत है इन सन्देशों की पाँचवीं कड़ी –

21. राजन! प्राणियों को जैसे बिना इच्छा के, बिना किसी प्रयत्न के, रोकने की चेष्टा करने पर भी पूर्वकर्मानुसार दु:ख प्राप्त होते हैं, वैसे ही स्वर्ग या नरक में – कहीं भी रहें, उन्हें इन्द्रिय सम्बन्धी सुख भी प्राप्त होते हैं। इसलिये सुख और दु:ख का रहस्य जानने वाले बुद्धिमान पुरुष को चाहिए कि इनके लिये इच्छा अथवा किसी प्रकार का प्रयत्न न करे।
(भागवत 11.8.1)

22. इस जगत में दो ही प्रकार के व्यक्ति निश्चिन्त और परमानन्द में मग्न रहते हैं – पहला पुरुष तो भोला-भाला निश्चेष्ट नन्हा सा बालक और दूसरा पुरुष वह जो गुणातीत हो गया हो।
(भागवत 11.9.4)

23. यद्यपि यह मनुष्य शरीर है तो अनित्य ही – मृत्यु सदा इसके पीछे रहती है; परन्तु इससे परम पुरुषार्थ की प्राप्ति हो सकती है। इसलिये अनेक जन्मों के बाद यह अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य शरीर पाकर बुद्धिमान पुरुष को चाहिए कि शीघ्र-से-शीघ्र, मृत्यु के पहले ही मोक्ष-प्राप्ति का प्रयत्न कर ले। इस जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष ही है। विषय भोग तो सभी योनियों में प्राप्त हो सकते हैं, इसलिये उनके संग्रह में यह अमूल्य जीवन नहीं खोना चाहिए।
(भागवत 11.9.30)

24. अहिंसा आदि यमों* का तो आदरपूर्वक सेवन करना चाहिए, परन्तु शौचादि नियमों* का पालन शक्ति के अनुसार और आत्मज्ञान के विरोधी न होने पर ही करना चाहिए। जिज्ञासु पुरुष के लिये यम और नियम के पालन से भी बढ़कर आवश्यक बात यह है कि वह अपने गुरु की, जो मेरे स्वरूप को जानने वाले और शान्त हों, मेरा ही स्वरूप समझ कर सेवा करे।
(भागवत 11.10.5)

25. सत्त्व, रज और तम – ये तीनों गुण इन्द्रियों को उनके कर्मों में प्रेरित करते हैं और इन्द्रियाँ कर्म करती हैं। जीव अज्ञानवश सत्त्व, रज आदि गुणों और इन्द्रियों को अपना स्वरूप मान बैठता है और उनके किये हुए कर्मों का फल सुख दु:ख भोगने लगता है।
(भागवत 11.10.31)

---

*यम – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

*नियम – शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान।

साधना परिवार की विभूतियाँ

प्रिय पाठको,

आपको स्मरण होगा कि पत्रिका के अक्तूबर-दिसम्बर 2022 अंक में उपरोक्त शीर्षक से एक स्थायी स्तम्भ प्रारम्भ किया गया था जिसमें सर्वप्रथम साहू काशीनाथ जी बीसलपुर जी के विषय में विस्तृत जानकारी लगातार 6 अंकों में प्रकाशित की गई थी। पत्रिका के इस अंक से हम पाठकों की सेवा में परम पूज्य स्वर्गीय सूर्यप्रसाद जी शुक्ल 'रामसरन' के विषय में उपलब्ध जानकारी आपके साथ साझा कर रहे हैं। ऐसी जानकारियाँ प्रकाशित करने का उद्देश्य यह है कि श्री गुरु महाराज के सान्निध्य में रह चुके महापुरुषों के योगदान और चरित्र कहीं भूतकाल के गर्त में दबकर लुप्त न हो जायें और आगामी पीढ़ियाँ इस जानकारी से वञ्चित न रह जायें।

परम पूज्य स्वर्गीय श्री सूर्यप्रसाद जी शुक्ल 'रामसरन'

परम पूज्य आदरणीय, उदार चरित्र, सुन्दर व्यक्तित्व, गुरु भक्ति से ओतप्रोत, अध्यात्म क्षेत्र के प्रेरक, प्रेम और सेवा की मूर्ति श्री सूर्यप्रसाद जी शुक्ल साधना परिवार की एक ऐसी अनमोल विभूति हैं जिनके द्वारा रचित सभी भजन भक्ति व विनीत भाव से ओतप्रोत होते हैं। उन्हीं भजनों में से एक भजन अनिवार्य रूप से 'हमारी साधना' पत्रिका के पृष्ठ 3 पर सुशोभित होता है।

श्री शुक्ल जी के विषय में जो भी जानकारी 'हमारी साधना' के पाठकों के साथ साझा की जा रही है वह उनके सुपौत्र श्री रवि कान्त जी शुक्ल द्वारा उपलब्ध कराई गई श्री प्यारेलाल जी भारती विरचित 'रामसरन चरितावली' नामक पुस्तिका पर आधारित है। इनमें से कुछ घटनाओं की पुष्टि श्रीमती सुशीला जायसवाल, उपाध्यक्ष, साधना परिवार द्वारा भी की गई है।

उल्लेखनीय है कि अपने शिष्यों के मध्य श्री शुक्ल जी 'चाचा जी' के नाम से प्रसिद्ध थे। इसी कारण इस लेख में भी स्थान-स्थान पर उनको 'चाचा जी' कह कर सम्बोधित किया गया है तथा 'रामसरन' उनका उपनाम था। इसलिये कहीं-कहीं उनको इस नाम से भी चिन्हित किया जायेगा।

जीवन परिचय एवं कुछ प्रेरणादायक घटनायें

जन्म

श्री शुक्ल जी का जन्म ग्राम रामनगर, जिला कानपुर, उत्तर प्रदेश में कुँवार (आश्विन) बदी 7 सम्वत 1958 तदनुसार रविवार दिनांक 5 अक्टूबर 1902 को श्री गया प्रसाद जी शुक्ल के घर में हुआ था। इनके पिता ग्राम के बड़े संभ्रान्त व्यक्ति थे। घर में काफ़ी खेती व बगीचा आदि थे। बाल्यावस्था में ही उन्हें माँ का विछोह सहन करना पड़ा। सौतेली माता ने उनका लालन-पालन किया जिनसे उन्हें विशेष स्नेह प्राप्त नहीं हुआ किन्तु उन्होंने अपनी सौतेली माता के प्रति अपनी माता से भी अधिक प्रेम और कर्तव्य का पालन किया। वे कहते थे कि हमारा उनके प्रति दुगना कर्तव्य है। उनकी पत्नी श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी जी बड़ी धार्मिक और पूज्य गुरुदेव की शिष्या थीं।

शिक्षा

आपकी शिक्षा मन्धना व शिवराजपुर में हुई थी जहाँ आपने मिडिल क्लास तक की शिक्षा प्राप्त की थी। पढ़ने में आप कुशाग्र बुद्धि थे जिससे अध्यापक

आप पर बड़े प्रसन्न रहते थे। आपको अंग्रेजी पढ़ने की इच्छा थी इसलिये आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिये आप बिठूर तथा कन्नौज भी रहे। आपको छात्रवृत्ति मिलती थी जिससे आप निर्धन सहपाठियों की यथाशक्ति सहायता करते थे। लगभग 7 वर्ष की आयु से ही आपके मन में सन्त महात्माओं के प्रति प्रेम व आदर था। अवसर मिलते ही आप महात्माओं की सेवा करने से नहीं चूकते थे। यद्यपि बचपन में वे शरीर से बहुत ही दुबले और कमज़ोर थे, बाद में वे इतने मोटे हो गये थे कि इनका वज़न लगभग 3 मन (लगभग 120 किलोग्राम) का हो गया था।

विवाह

आपका विवाह लगभग 16 वर्ष की आयु में ग्राम खम्हैला, जिला कानपुर के सम्भ्रान्त परिवार में श्री रघुनन्दन प्रसाद जी दुबे की कन्या सुश्री विन्ध्यवासिनी देवी के साथ हुआ था। वह सुन्दर और सरल स्वभाव की स्त्री थीं। गाँव में कोई स्कूल न होने के कारण इनको शिक्षा नहीं मिल पाई थी। इनकी माता का स्वर्गवास भी इनके बचपन में ही हो गया था। इन्होंने 5 पुत्रों व 3 पुत्रियों को जन्म दिया। आपकी धर्मपत्नी को आरम्भ में अक्षर ज्ञान भी नहीं था, परन्तु वे बड़ी सरल स्वभाव, योग्य, समझदार व व्यवहारकुशल थीं। उन्होंने आपके साथ गृहस्थी की गाड़ी चलाने में पूरा सहयोग दिया। इतना ही नहीं, भगवान् के भजन, पाठ, ध्यान, रामायण पाठ, तीर्थ यात्रा आदि में भी पूर्ण सहयोग दिया। सन्त महात्माओं की सेवा तथा अखण्ड रामायण पाठों में अशिक्षित होते हुए भी भाग लेती रहीं। भगवान् की ऐसी कृपा हुई कि इन्हें रामायण पूरी याद हो गई। रामायण का पाठ अगर कोई गलत कर रहा हो तो ये उसे टोक देती थीं। इतना ही नहीं, रामायण की चौपाई आवश्यकता पड़ने पर अपने आप कह देती थीं।

यह धर्मपत्नी के सहयोग का ही परिणाम था कि आप इतना आगे बढ़ सके अन्यथा आज इस अवस्था में पहुँचना कठिन था। यह सभी को प्रेम से नहला देती थीं। स्वामी भजनानन्द जी और स्वामी शुकदेवानन्द जी आप दोनों को मनु और शतरूपा कहा करते थे।

नौकरी

पढ़ाई समाप्त करने के बाद आपकी पहली नौकरी कानपुर के रेलवे मॉल गोदाम में लगी थी, पर वहाँ रिश्वतखोरी का वातावरण देखकर शीघ्र ही वहाँ से नाता तोड़ लिया। उसके बाद लखनऊ शुगर मिल में टाइम कीपर, फिर लैब केमिस्ट, फिर लैब इन्चार्ज, चीफ केमिस्ट आदि पदों को सुशोभित करके निरन्तर आगे बढ़ते रहे। आपकी लगन, ईमानदारी व परिश्रम के कारण मिल में इतना लाभ हुआ की शीघ्र ही मालिकों ने दूसरी मिल लगा ली, जिससे गाँव के बहुत से लोगों को नौकरी मिल गई।

काल बीतता गया। समय आने पर मिल के छोटे मालिक श्री कृष्ण चन्द्र जी (इल्ला जी) अमेरिका से शुगर सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त करके शुगर फैक्ट्री का काम देखने लगे। श्री इल्ला जी बड़े ही भक्त व सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। वे हमेशा गले में तुलसी की माला धारण किये रहते थे और श्री शुक्ल जी को अपना गुरु मानकर आदर सत्कार करते थे। श्री कृष्ण चन्द्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशवती जी भी बड़ी सरल स्वभाव की तथा निरभिमानी थीं। वह भी समय-समय पर श्री शुक्ल जी से मिलने हरिद्वार व ऋषिकेश जाती रहती थीं। स्वामी रामानन्द साधना धाम हरिद्वार में स्वामी जी का सिंहासन भी आपने (इन्होंने) ही बनवाया था।

पूज्य शुक्ल जी चीनी मिल में मुख्य रसायनज्ञ (Chief Chemist) के रूप में सेवारत थे। चीनी मिल के मालिक आपका अत्यधिक सम्मान करते थे। मिल के कर्मचारियों से पूज्य चाचा जी विशेष स्नेह और सहयोग करते थे। एक समय की घटना है कि

एक कर्मचारी से शुगर की नाप करने वाला एक यन्त्र टूट गया था। वह बहुत डर रहा था कि अब तो मालिक हमें नौकरी से निकाल देंगे। तब उसने पूज्य चाचा जी से अपनी व्यथा बताई तो चाचा जी ने उससे कहा कि जब हम और मालिक दोनों एक साथ कार्यालय में हों तब तुम आकर ऐसा कहना :–

गुज़ारिश एक है मेरी,
मग़र कहने से डरता हूँ।
इजाज़त हो तो कह दूँ मैं,
सिलेण्डर मुझसे टूटा है॥

उसने ऐसा ही किया और मालिक ने चाचा जी के सामने ही उसे माफ़ कर दिया। इतने दयालु थे चाचा जी अपने से छोटों के प्रति।

पूज्य शुक्ल चाचा जी बड़े से बड़े पद वालों से छोटे से छोटा काम करवा कर उन्हें निर्मल कर देते थे। एक बार पूज्य मथुरा भैय्या जी पूज्य चाचा जी के साथ सामूहिक सत्संग में भ्रमण (Tour) पर गये थे। वहाँ उन्होंने एक व्यक्ति के पैर छूने के लिये भैय्या जी से कहा और पूछा कि इनको जानते हो ये कौन हैं? भैय्या जी ने कहा हाँ, ये गौरी शंकर हैं, हमारे साथ काम करते हैं। वे व्यक्ति चपरासी थे और पूज्य भैय्या जी को फाइल लाकर देना, चाय आदि लाने का कार्य करते थे। पूज्य चाचा जी ने उनके पैर छूने को भैय्या जी से कहा। थोड़ी देर भैय्या जी खड़े रहे। फिर चाचा जी ने कहा – खड़े क्यों हो, झुक कर पैर छुओ जल्दी से। फिर भैय्या जी ने तुरन्त पैर छू लिये और उन्हें अनुभव हुआ कि वे बहुत हल्के हो गये।

एक अन्य अवसर पर बिठूर शिविर में अनेक साधिकाओं के साथ डॉ. पद्मा शुक्ला (दीदी) जी पूज्य चाचा जी के साथ गई थीं। वहाँ चाचा जी ने उनसे एक साधिका को साथ लेकर नापदान साफ़ करने को कहा जिसमें घर का गन्दा पानी इकट्ठा किया जाता है। पूज्य दीदी ने खुशी-खुशी उनकी आज्ञा का पालन किया।

पूज्य चाचा जी नित्य सत्संग करते थे। एक बार घर से सत्संग के लिये चले तो घर से बाहर नाली में उनका पैर पड़ गया जिससे शरीर घायल हो गया और रुधिर बहने लगा। डॉक्टर ने दो-तीन दिन आराम (Bed Rest) करने को बोल दिया था लेकिन वह तो अगले ही दिन सत्संग में उपस्थित हो गये। कारण पूछने पर चाचा जी ने कहा कि हमारा आराम-गृह तो सत्संग ही है। चाचा जी सामाजिक कार्यों में ज्यादा रुचि नहीं रखते थे। एक बार लोगों के आग्रह पर वह भाई के बेटे की शादी में चले तो गये पर वहाँ पहुँचते ही उनका दम घुटने लगा और उनको घर वापिस भेजने की व्यवस्था करनी पड़ी।

पूज्य स्वामी जी से मिलन

अगस्त 1942 की घटना है। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीकान्त की 22 वर्ष की अल्पायु में अचानक मृत्यु हो जाने से दोनों पति पत्नी बहुत ही व्यथित हुए जिसके कारण वे अस्वस्थ रहने लगे। पुत्र के विछोह में माँ ने तो चारपाई ही पकड़ ली थी। कोई औषधि भी काम नहीं कर रही थी। उस समय आप पीलीभीत में थे। एक दिन जब आप ड्यूटी से लौटे तो आपकी धर्मपत्नी ने बताया कि – 'एक युवा संन्यासी आये थे और आपको पूछ रहे थे कि शुक्ल जी घर पर हैं। हमने रुकने को कहा पर वे यह कहकर चले गये कि फिर आयेंगे। वह बिना आतिथ्य के ही लौट गये।'

अतिथि का इस प्रकार खाली लौट जाना आपको अच्छा नहीं लगा और तुरन्त उनकी खोज में निकल पड़े। पूछताछ से पता लगा कि वे संन्यासी राजकीय इण्टर कॉलेज के प्राध्यापक श्री रामदत्त जोशी जी के घर गये हैं। जोशी जी से पूछा तो उन्होंने कहा कि आये तो हैं परन्तु अब ध्यान में बैठ गये हैं, अगले दिन सायं को 5.00 बजे मिलेंगे। अगले दिन उनके यहाँ पहुँचे तो स्वामी जी बाहर निकल कर आये

और बिना परिचय के ही उनको नाम से सम्बोधित किया जिससे शुक्ल जी को बहुत ही विस्मय हुआ। इससे भी अधिक विस्मय की बात तो यह थी कि श्री रामदत्त जोशी जी से भी शुक्ल जी का कोई परिचय नहीं था, फिर उनके घर का पता स्वामी जी को कैसे लगा। स्वामी से बहुत पूछा कि आप हमारे यहाँ कैसे पहुँचे तो स्वामी जी मुस्करा भर दिये।

स्वामी जी के पूछने पर जब शुक्ल जी ने अपनी सारी व्यथा बताई तो स्वामी जी आपके घर पधारे और आपकी पत्नी का सब समाचार जानकर उनको पूजा घर में लाने के लिये कहा। पूजा घर में स्वामी जी ने आँखें बन्दकर ध्यान करके आशीर्वाद दिया और कहा कि कोई औषधि मत देना, सब ठीक हो जायेगा। आशीर्वाद का प्रभाव तुरन्त नज़र आने लगा और उनमें सुधार के लक्षण दिखाई देने लगे। स्वामी जी ने कहा कि तुम्हारा बेटा चला गया तो क्या हुआ, हम भी तो आपके बेटे हैं। इतना सुनते ही चाची जी (श्रीमती शुक्ल) के अन्दर पुत्र स्नेह उमड़ आया और उनके आँचल में दूध भर आया जिसका बाद में उपचार करवाना पड़ा। उसके बाद उनका स्वास्थ्य ठीक रहने लगा।

एक दिन जोशी जी के यहाँ सत्संग ध्यान से उठकर स्वामी जी अन्य साधकों को वहीं छोड़कर आपको लेकर टहलने के लिये ले गये। वहाँ से आपको अकेले ही एक बगीचे में ले गये और वहाँ पहुँचकर अपनी चादर बिछाकर आग्रहपूर्वक आपको बिठा दिया। फिर शुक्ल जी से पूछा कि आप किस की पूजा करते हो। शुक्ल जी ने कहा कि महाराज हम तो कृष्ण नाम का जप करते हैं और गले में श्री कृष्ण भगवान् की फोटो पहने रहते हैं। स्वामी जी ने कहा कोई बात नहीं, अपनी आँखें बन्द करो। आँखें बन्द करवाकर स्वामी जी ने अपना वरद हस्त आपके सिर पर रख कर राम नाम का उच्चारण किया। ऐसा करते ही श्री शुक्ल जी संज्ञाशून्य हो गये। थोड़े विश्राम के बाद स्वामी जी ने हाल पूछा तो आपने कहा कि क्या बतायें, अभी तक तो कृष्ण कृष्ण कहते थे, अब राम राम ही निकल रहा है। स्वामी जी ने कहा ठीक है, अब राम राम ही जपा करो। अब श्यामसरन से रामसरन हो गये।

इस प्रकार दोनों प्राणियों को नाम की दीक्षा देकर कृतार्थ कर दिया और कहा कि चाची जी हम आपके पुत्र हैं। इसके बाद तो श्री शुक्ल जी का जीवन भजन-पूजन में ही बीतने लगा तथा दूसरों को भी इस मार्ग पर लाने में संलग्न हो गये। आप स्वामी जी को अवतारी पुरुष कहा करते थे। इसके पहले बहुत से सन्त महात्माओं ने आपको नाम लेने की प्रेरणा दी थी परन्तु आपका मन किसी से भरा नहीं था।

पीलीभीत में सत्संग

पीलीभीत पहाड़ों के समीप था इसलिये कोई न कोई महात्मा पीलीभीत आते रहते थे और दोनों पति-पत्नी उन महात्माओं की बड़े आदर सम्मान के साथ सेवा किया करते थे। घर में किसी प्रकार की कमी नहीं थी। आपने मालिकों से कहकर एक सत्संग भवन और महात्माओं के ठहरने के लिये स्थान बनवा दिये थे तथा उनके भोजन आदि की व्यवस्था भी करा दी थी। सत्संग भवन में नित्य सत्संग होता था। प्रत्येक रविवार को विशेष रूप से कीर्तन भजन व अन्तिम रविवार को अखण्ड जाप हुआ करता था। मिल से छुट्टी होने के बाद बस्ती में कहीं न कहीं अखण्ड रामायण के कार्यक्रम होते थे जिनमें आप दोनों पति-पत्नी सम्मिलित होते थे। एक बार एक हरिजन कर्मचारी के आग्रह पर उसके घर भी आप दोनों ने अखण्ड रामायण का आयोजन किया।

(क्रमशः)

श्री गुरुदेव निर्वाण दिवस साधना शिविर-2024 - विवरण

निर्वाण दिवस के अवसर पर 14 अप्रैल की रात्रि को अखण्ड जाप किया गया। 15 अप्रैल को प्रातः 5:30 पर गंगा जी के घाट पर जाकर गुरुदेव को पुष्पांजलि अर्पित की गई। उसके बाद मन्दिर में आकर जाप की पूर्ति की गई। तत्पश्चात् उपस्थित साधकों ने गुरुदेव महाराज के प्रति अपनी अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की। दोपहर में ब्रह्मभोज का आयोजन किया गया जिसमें 13 ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन कराया गया। 16 अप्रैल की अपराह्न की सभा में ड्यूटियां लगाकर विधिवत शिविर का शुभारम्भ किया गया। शिविर में 80 साधकों ने भाग लिया। शिविर की पूर्ति 21 अप्रैल की प्रातः के सामूहिक जाप के पश्चात् की गई। उस दिन बाहर जाने वाले साधकों को मार्ग का भोजन देकर विदा किया गया।

प्रवचन सार

शिविर में साधकों द्वारा दिये गये प्रवचनों का सार नीचे दिया जा रहा है –

बहन कान्ति सिंह जी

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥

गुरुदेव भगवान् ने कहा है – मैं गीता को अपने अन्दर रमा लेना चाहता हूँ। गीता हमारी साधना का ग्रन्थ है। गीता में भगवान् ने प्रभु प्राप्ति के लिये तीन मार्ग बताये हैं –

1. भक्ति योग, 2. कर्म योग, 3. ज्ञान योग।

हमारी साधना भक्ति मिश्रित कर्मयोग की साधना है। गीता के अध्याय 12 के श्लोक 6 में भगवान् ने कहा है –

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते॥
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥

अर्थात् जो भक्त मेरे ही परायण होकर मुझ सगुण रूप परमेश्वर का अनन्य भाव से चिन्तन करते हुए सभी कर्मों को मुझमें ही अर्पण करते हैं। उन मुझमें लगे हुए प्रेमी भक्तों का मैं शीघ्र ही संसार सागर से उद्धार कर देता हूँ।

हमारे जो कर्तव्य हैं, जहाँ भगवान् ने हमें रखा है, जिस स्थिति में रखा है उसमें रहते हुए अपने कर्तव्यकर्म को भली भाँति करते हुए यदि हम भगवान् से जुड़े रहते हैं तो हमारे सम्पूर्ण कर्म स्वतः ही भगवान् को अर्पित होते चले जाते हैं। नाम की डोरी से अपने को जोड़कर हमें सतत् नाम का ही अभ्यास करना है। नाम के प्रभाव से पूर्व में किये हुए कई जन्मों के संचित पाप नष्ट हो जाते हैं।

अनन्य भक्ति के लिये गुरुदेव ने तीन बातें आवश्यक बताई हैं –

1. प्रभु कृपा, 2. गुरु कृपा, 3. सतत् नाम का अभ्यास।

प्रभु कृपा से हमें मनुष्य शरीर मिला और ऐसे शक्तिशाली परम दयालु गुरुदेव का संग मिला। अतः अब हमें भरपूर प्रयास करना है कि नाम जप का निरन्तर अभ्यास बनाये रखें। गुरुदेव भगवान् बताते हैं कि हमें अपनी सारी आकांक्षाएँ, मान्यताएँ और समस्त इच्छाएँ सभी ओर से हटाकर एकमात्र भगवान् के चरणों में ही समर्पित करनी होंगी।

अनन्यता के विषय में रामचरितमानस में स्वयं भगवान् राम ने अपने श्रीमुख से हनुमान जी के प्रति कहा है –

सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत॥

इसलिये सतत् राम नाम का जप करना चाहिए जिससे हम सभी विकास के मार्ग में आगे बढ़ते चले जायेंगे।

बहन कमला वर्मा सिंह जी

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला इक अंग।
तूल ना ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

हम सभी बड़े भाग्यशाली हैं जो हमें सत्संग मिला है। गीता हमें सांसारिकता और आध्यात्मिकता का अनुपम मेल सिखाती है।

श्री गुरु महाराज बताते हैं कि सारे कर्मों को करते हुए यदि हम भगवान् से जुड़ जाते हैं तो हमारे कर्म भगवान् को ही समर्पित हो जाते हैं।

राम नाम इक अंक है सब साधन हैं सून।

अध्यात्म में नियमितता बहुत ही महत्व की चीज़ है। जब हम अपने कर्म को समुचित मनोवृत्ति से करते हैं तो वही कर्म बन्धन से छुड़ाने वाले होते हैं।

गीता के अध्याय 4 के श्लोक 11 में कहा गया है –

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

अर्थात् जो जिस भाव से मुझे भजता है उसी भाव से मैं उसको अपना लेता हूँ।

अगम अगोचर मन बुद्धि से, बंधे प्रेम की डोर से।

भगवान् प्रेम से किसी के बेटे बन गये तो किसी के सेवक बन गये। भगवान् अपने भक्तों की पल-पल रखवाली करते हैं। नन्दा नाई बनकर दुर्योधन के चरण तक दबा देते हैं।

गुरुदेव भगवान् ने हमें भक्ति का मार्ग दिया है। राम नाम के जप से हमारे जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट होते चले जाते हैं, इसलिये हम हर समय जागरूक रहें।

भगवान् ने गीता में कहा है – जो देवताओं को भजते हैं वे देवताओं को प्राप्त होते हैं, भूतों को भजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं और जो भगवान् की उपासना करते हैं वे भगवान् को प्राप्त होते हैं। देवताओं की पूजा को अविधिपूर्वक कहा गया है। परन्तु भगवान् को प्राप्त होने पर हमें किसी और चीज़ की आवश्यकता ही नहीं रहती। अगर हम फल और आसक्ति से रहित होकर भगवान् को कुछ भी अर्पित करते हैं तो भगवान् उसको प्रेम से स्वीकार करते हैं।

मानस में कहा गया है –

भाँय कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥

हमें अपने सभी कर्मों को पूजा के फूलों की तरह प्रभु के चरणों में अर्पण करते चले जाना है।

बहन रमन तिवारी जी

पूज्य गुरुदेव भगवान् बताते हैं कि संसार में सभी से प्रेम करो लेकिन किसी से कोई आशा न रखो। यदि हम दूसरों से आशा रखते हैं और कोई हमारे मन के अनुरूप काम नहीं करता तो हम उससे द्वेष करने लगते हैं। परन्तु जब हम सभी में भगवत् भाव रखते हैं तो हमारी भावना बदल जाती है क्योंकि बुराई तो सभी में है और हम में भी है।

इसलिये हमें सभी काम करते हुए भगवान् की याद को बनाये रखना होगा। राग-द्वेष, लाभ-हानि और मान-अपमान आदि में सम रहना होगा।

बहन अरुणा पाण्डे जी – प्रवचन–1

तुमने छुआ तो रेत को चन्दन बना दिया।
तुमने छुआ तो धूल को वन्दन बना दिया॥

सन्त तुलसीदास ने लिखा है कि हमारे जीवन में गुरु का बहुत महत्व है। गुरु के बताये मार्ग का अनुसरण करके हम विकास के मार्ग में आगे बढ़ सकते हैं। साधना का उद्देश्य है भागवती चेतना का अवतरण। हम तीन ऐषणाओं से घिरे रहते हैं – पुत्रैषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा। हमारे अन्दर परमात्मा का गुण आ जाये तो हम इन तीनों ऐषणाओं से मुक्त हो जायें। किन्तु पहले हमें मनुष्य बनना होगा।

भागवती चेतना का अवतरण और इसकी स्थापना हो जाये। पूर्णत्व की प्राप्ति के लिये गुरुदेव भगवान् ने बहुत सारी चीज़ें बताई हैं –

अपूर्णताओं से परे पूर्णत्व के शुभ धाम में,
ले चलो हे देव हमको अज्ञता से ज्ञान में।

तन, प्राण और मन – इन सभी को दिव्य करना है। इसके लिये हमें तन को स्वच्छ रखना होगा, प्राण से उसी का नाम लेना होगा और मन को स्वस्थ रखने के लिये हमें सभी की अच्छाई देखनी चाहिए। हमारी साधना का आधार इन्द्रिय संयम नहीं है। ज़बरदस्ती का संयम साधना में बाधक है। साधना में आगे बढ़ने पर संयम स्वतः ही होता चला जाता है।

प्रवचन–2

सुन्दर काण्ड को सुन्दर काण्ड क्यों कहा जाता है –

1. यहाँ पर सीता जी का ठीक-ठीक पता चला।
2. यहाँ पर दो सन्त आपस में मिले।
3. इसमें हमें असन्त के लक्षण पता चलते हैं।
4. सन्त के लक्षण का भी पता चलता है।

जो पूरी तरह भगवान् में ही समर्पित होते हैं उन्हें सन्त कहते हैं। जैसे हनुमान जी सन्त थे और उनके गुण थे –

विद्यावान गुणी अति चातुर
राम काज करिबे को आतुर।

हमें प्रभु के काम में आलस्य या प्रमाद नहीं करना चाहिए। और जब सन्त का संग हो जाता है तो हमारा विवेक जागृत हो जाता है। सन्तों का संग हमेशा ही फलदायी होता है, इसलिये सदा सन्तों का ही संग करना चाहिए। हमें हमेशा विनम्रता का ही व्यवहार करना चाहिए और हर समय भगवान् के नाम का स्मरण करना चाहिए। नाम के सुमिरन से ही हमारे दुःख की निवृत्ति हो जाती है।

सुन्दर काण्ड से यही शिक्षा मिलती है कि जहाँ ज़रूरत हो वहीं हम अपनी शक्ति का प्रयोग करें। हमें अपनी वाणी का सदुपयोग करना है, व्यर्थ की बातों में समय नहीं गँवाना है। हर समय भगवान् का ही स्मरण करना है। कार्य के आरम्भ में, कार्य के बीच में और कार्य के अन्त में भी भगवान् का ही स्मरण करना चाहिए।

बहन मीना बिजलवान जी

गुरुदेव बताते हैं कि हम सभी से प्रेम करें। हमें अपने मन को स्वस्थ रखना है। जितना हो सके भजन करें और दूसरों की बुराई न करें। इसके स्थान पर स्वयं का विश्लेषण करें तो पता चलेगा कि – **बुरा जो देखन मैं चला बुरा ना मिलिया कोय।**
जो मन खोजा आपणा, मुझसे बुरा न कोय॥

हम जब भी कुछ बोलें, सोच समझ कर बोलें, प्रेम से बोलें। अधिक से अधिक राम नाम का जाप करें। हमेशा अपने गुरु का ध्यान करें और गुरु के बताये हुए मन्त्र का जाप करते रहें। गुरु को अपने अंग संग महसूस करें। एक बार गुरु की शरण आने पर हमारी सारी जिम्मेदारी गुरु की हो जाती है। बुराई देखनी है तो अपने में देखनी चाहिए और भलाई देखनी है तो दूसरों में देखें। हमारी सच्चाई और अच्छाई ही हमारे साथ जायेगी। हम कोई भी ऐसा काम न करें जिससे दूसरों को कष्ट हो।

गुरु मन्त्र अमूल्य है। सुबह सबसे पहले गुरु को प्रणाम करें, फिर धरती माँ को प्रणाम करें। अधिक से अधिक राम नाम का जप करें। शुरुआत में ध्यान में मन नहीं लगता लेकिन हमें बैठना ज़रूरी है।

गुरु वचनों को रखना संभाल के,
गुरु वचनों में गहरा राज़ है।
जिसने जानी है महिमा गुरु की,
उसका डूबा कभी न जहाज है॥

श्री जगत सिंह जी – प्रवचन–1

महाराज जी ने अवरोह पथ की साधना बताई है। गीता के अध्याय 2 के श्लोक 59 में कहा गया है –

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते॥

विषयों का त्याग करने पर भी उसका रस हमारे अन्दर बना रहता है। अतः रस का समाधान कैसे हो – जब परमेश्वर का दर्शन हो जाये। भक्ति और समर्पण की साधना में हमारे गुरुदेव ने बताया है कि

भक्ति रस की साधना विषय रस से भक्ति रस में परिवर्तित हो जाती है, जैसे सूरदास और मीराबाई ने भक्ति रस प्राप्त करके ही भगवान् को प्राप्त कर लिया है।

प्रभु दर्शन की प्राप्ति अनन्य भक्ति से होती है। इसके लिये हम हर जगह हर समय संसार में रहते हुए प्रभु से सदा युक्त रहें। जिस प्रकार विद्यार्थी स्कूल में जाकर पढ़ाई करता है, उसी प्रकार यह संसार हमारा विद्यालय है। अनन्य भक्ति प्राप्त करने के लिये तीन चीज़ें बताई हैं – प्रभु कृपा, गुरु कृपा और नाम जप में विश्वास।

योनि जड़ बन पशु से उबारा है जिसने
दिया तन मनुष्य का कि हो योग उससे।

प्रभु की कृपा निरन्तर हमारे ऊपर बरसती रहती है। अत: जागरूक रहकर हर समय हम उनका चिन्तन करें। गुरु की कृपा अपार है। परम पूज्य गुरुदेव परम कृपालु, परम दयालु और कृपा के सागर हैं, वे अपने साधकों की छोटी-छोटी मांगों को भी पूरा कर देते हैं।

हमारे गुरुदेव ने नाम को संकल्प शक्ति से हमें प्रदान किया है और नाम जप से बढ़ कर और कोई दूसरा साधन नहीं है।

नाम जपन प्रभु प्रेम है भक्ति समर्पण खान।
महाशक्ति अविरल बहे है प्रसाद सत् ज्ञान॥

नाम जप से हमारे विकार शान्त होते हैं और हम साधना में आगे बढ़ते चले जाते हैं।

प्रवचन–2

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा॥

जिस प्रकार एक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिये विद्यालय जाता है उसी प्रकार हम सभी अपने अध्यात्म का विकास करने के लिये इस मार्ग पर आते हैं। जब हम सब पर भगवान् की विशेष कृपा होती है तभी हमें सत्संग मिलता है। सत्संग में आने पर ही हमें ज्ञान प्राप्त होता है और सत्संग का प्रभाव पता चलता है।

पत्र संख्या 12 में महाराज जी ने लिखा है – हमें अपने व्यवहार को जांचते रहना चाहिए कि जो बात हम दूसरों से करते हैं वही व्यवहार यदि कोई दूसरा हमसे करता तो क्या हमें ठीक लगता अथवा नहीं।

दूसरी बात है सेवा। सेवा चार तरह से कर सकते हैं –

1. तन से, 2. मन से, 3. धन से, 4. वाणी से।

यदि किसी बुज़ुर्ग को रास्ता पार करा देते हैं या सीढ़ियाँ चढ़ने में मदद कर सकते हैं तो यह हमारी सेवा हो जायेगी। मन से हम किसी के लिये अच्छा सोचकर भी सेवा कर सकते हैं। वाणी से मीठा बोलकर प्रेममय वचनों से सेवा कर सकते हैं। आर्थिक रूप से कमज़ोर व्यक्ति की धन से सेवा कर सकते हैं।

सेवा साधन वृक्ष है फल है प्रेम प्रसाद।
मंत्र राम का बीज है मेटे विषय विषाद॥

मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ है। हमें अपने समय का सदुपयोग करना है। पत्र संख्या 15 में गुरु महाराज ने लिखा है – 'साधक अपने विचारों को और वाणी को ऐसा संयमित करने का यत्न करता है कि कार्य में शक्ति का अपव्यय तो होता ही नहीं, बुरे संस्कार भी ग्रहण नहीं कर पाता। वाणी को मधुमयी लोकहितकारिणी तथा आत्महितकारिणी बनाना उसका ध्येय होता है।'

वाणी ऐसी बोलिये मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय॥

साधक को सदा ही प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। अन्त:करण में प्रसन्नता होने पर हमारे सभी दुखों का अभाव हो जाता है। राग-द्वेष से विहीन होकर ही हम प्रसन्न हो सकते हैं।

बहन कुसुम माहेश्वरी जी – प्रवचन–1

गुरुदेव भगवान् ने **'मेरे विचार'** पुस्तक में बताया है कि हमारा आदर्श ऊँचा होना चाहिए। परमात्मा

को स्वयं में ही पहचानना और परमात्मा की प्राप्ति ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए। समय-समय पर हमें आत्म निरीक्षण करते रहना चाहिए। आत्म निरीक्षण का अर्थ है अपने मन, बुद्धि और इन्द्रियों का निरीक्षण। अपने अन्दर जो कमियाँ अथवा त्रुटियाँ दिखें उनका आत्म शोधन करना चाहिए।

हमारा शरीर पाँच कोशों से बना है –

1. अन्नमय कोष,
2. प्राणमय कोष,
3. मनोमय कोष,
4. विज्ञानमय कोष,
5. आनन्दमय कोष।

हमें सेवा के अवसर की तलाश में रहना चाहिए। भेद-भाव से रहित होकर सभी की सेवा करनी है।

मनोमय कोष के शोधन के लिये हम अपनी इन्द्रियों को भगवान् के लिये लगायें, अपनी कामनाओं को भगवद कार्य में लगायें। विज्ञानमय कोष का शोधन करने के लिये हर्ष और शोक से रहित होकर भगवान् को अपने में देखना और सब में भगवान् को देखना है।

प्रवचन–2

मिला पंथ अति सुगम प्रेम का साधन और पुरुषार्थ का।
परम गति पा जाने का अवसर इस बार मिला।

पूज्य गुरुदेव भगवान् ने साधना में व्यवहार का बहुत महत्व बताया है। तीन बातों पर विशेष ध्यान देना है –

1. जैसा व्यवहार हम दूसरों से चाहते हैं वैसा हम दूसरों से करें।
2. हमें दूसरों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनना है।
3. प्राप्त वस्तुओं का सही सदुपयोग करना है।

हमें अपनी इन्द्रियों को संयमित करना चाहिए। पांच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं – आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा। इन इन्द्रियों के माध्यम से हमें अपने कर्तव्यों को ठीक-ठीक पूरा करना चाहिए। हमारा उद्देश्य भगवत् प्राप्ति है जिसको कभी भी नहीं भूलना चाहिए। हमें आत्मा की भूख को तृप्त करना है।

जब सुख होते हुए भी हमारा मन विचलित होता है तब हमें अन्दर की पुकार को सुनना चाहिए। पुकार को तीव्र करने के लिये गुरुदेव ने तीन साधन बताये हैं –

1. सत्संग, 2. स्वाध्याय और मनन, 3. प्रार्थना।

अध्यात्म विकास के लक्षण हैं –

1. बढ़ती हुई समता तथा स्थिरता,
2. शान्त होते काम क्रोध आदि विकार,
3. हृदय में विकसित होता प्रेम।

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है – साधक का पैमाना साधक की जेब में होता है। इसलिये हमें हर समय सचेत और सचेष्ट रहना है।

बहन मीरा दुबे जी

हमारे महाराज जी ने बताया है कि हमारी साधना भक्ति मिश्रित कर्मयोग की साधना है। भक्ति हमारे अन्दर तभी आयेगी जब हम राम नाम का सहारा लेंगे। इसी से आत्मा की शुद्धि होती है और इसी से आत्मा की जागृति होती है।

गीता के अध्याय 8 के श्लोक 4 में कहा गया है –

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतं।
अधियज्ञोहमेवात्र देहे देहभृतां वर॥

जब भक्ति हमारे शरीर में प्रवेश करती है तो भूख हमारी व्रत बन जाती है; भक्ति जब पानी में प्रवेश करती है तो चरणामृत बन जाती है; भक्ति जब संगीत में प्रवेश करती है तो संकीर्तन बन जाती है।

नाम के द्वारा हमें निराकार और सगुण – दोनों रूप का दर्शन होता है। हमें हमेशा यह विचार करते रहना चाहिए कि – मैं सत्य हूँ, मैं नित्य हूँ, मैं सनातन हूँ। जो व्यापक है वही ब्रह्म है। हमें राम नाम को उच्च स्तर में पहुँचाना होगा।

हमको भगवान् का चिन्तन करना है, भगवान् के गुणों का स्मरण करना है, राम नाम का दोहन करना है, अनन्य चित्त से हर समय भगवान् का चिन्तन करना है। राम नाम के प्रभाव से हमारा यह लोक

और परलोक दोनों सुधर जायेंगे।

श्रीमती सुशीला जायसवाल जी

प्रवचन–1

यज्ञ क्या है –

यज्ञेश्वर के लिये किया गया सभी कर्म यज्ञ है। गीता में भगवान् ने कहा है – यज्ञ शेष का उपभोग करने वाले सभी बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। अध्याय 4 में बहुत प्रकार के यज्ञों का वर्णन किया गया है किन्तु उनमें चार प्रकार के यज्ञ विशेष बताये गये हैं –

1. द्रव्यमय यज्ञ, 2. योग यज्ञ,
3. तपोयज्ञ, तथा 4. स्वाध्याय और जप यज्ञ।

मिली हुई वस्तु को निष्काम भाव से भगवान् को अर्पण करना है यथा –

1. तन मिला है, 2. धन मिला है,
3. जन मिला है, 4. वस्तुएँ मिली हैं।

भगवान् कहते हैं जो हर समय मेरा स्मरण करता है, यदि वह अन्त समय में जप में असमर्थ हो जाता है तो मैं स्वयं उसके अन्दर बैठकर जप करता हूँ। चार बातें अत्यन्त आवश्यक हैं –

1. भजन निष्काम भाव से होना चाहिए। सकाम भाव के भजन से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।
2. जीवन में अनेक अनुकूलतायें और प्रतिकूलतायें आती हैं जो हमारे विकास के लिये आवश्यक हैं। हमें हर स्थिति-परिस्थिति में सम रहना चाहिए। नाम के जप से समता स्वतः ही आती जाती है।
3. हमें तप के लिये कहीं दूर नहीं जाना है। कर्तव्य पालन करने में जो शारीरिक या मानसिक कष्ट होता है वही हमारा तप होता है। साधक अपने कष्टों को दूर करने के लिये कभी भगवान् से प्रार्थना नहीं करता, बस निष्काम भाव से सभी की सेवा करता है।
4. गुरुदेव के साहित्य का नित्य नियम से पढ़ना आवश्यक है। इससे भगवान् की प्राप्ति हो जायेगी, थोड़ा पुरुषार्थ तो करना पड़ेगा। मुख्य रूप से हमें अपने पथ-प्रदर्शक की आज्ञा का पालन करना चाहिए, उनकी आज्ञा के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए और नित्य निरन्तर भगवान् के नाम का जप करना चाहिए।

प्रवचन–2

गीता के अध्याय 4 के श्लोक 11 में कहा गया है –

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहं।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

इस श्लोक में भगवान् ने अपने कर्मों की दिव्यता का वर्णन किया है। भगवान् कहते हैं – जो जिस प्रकार से मेरी शरण में आता है, मैं उसे उसी प्रकार से स्वीकार करता हूँ।

भगवान् ने अर्जुन को बताया कि यह ज्ञान मैंने सर्वप्रथम सूर्य से कहा था, सूर्य ने वैवस्वत मनु से कहा और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु से कहा, उससे राजर्षियों ने जाना, परन्तु बहुत काल बीत जाने पर यह योग धीरे-धीरे लुप्त होता गया। उसी ज्ञान को अर्जुन अब मैंने तेरे प्रति कहा है। अर्जुन की जिज्ञासा पर भगवान् बताते हैं कि मैं युग-युग में अवतार लेता रहता हूँ, परन्तु मेरे जन्म और कर्म दिव्य होते हैं जो साधारण मनुष्यों के जानने में नहीं आते। जो इनकी दिव्यता को जान जाता है, वह संसार सागर से मुक्त हो जाता है। भगवान् की तीन प्रमुख विशेषतायें हैं –

1. वह अजन्मा हैं (भगवान् प्रकट होते हैं),
2. वह अविनाशी हैं,
3. वह ईश्वर हैं।

मानस में गोस्वामी जी ने लिखा है –

जब जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

भगवान् का भक्त जिस भाव से या जिस प्रकार से आता है उसी भाव से उसे अपनी शरण में ले लेते हैं। वे भक्त के लिये पुत्र, माता, पिता, शिष्य

आदि सभी बन जाते हैं। भगवान् सभी से श्रेष्ठ नाता निभाते हैं, अत: हम सभी को भी अपने सम्बन्धियों से निष्काम भाव से कर्तव्य पालन करना चाहिए। भगवान् से शरणागति का भाव ही सबसे श्रेष्ठ है। भक्ति हमारे पुण्यों का फल नहीं है। शरणागति होने पर भक्ति स्वत: ही प्राप्त हो जाती है और प्रभु की कृपा प्राप्त होने लगती है। अत: हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी शक्ति और साधन को पूरी तरह भगवान् में ही लगायें। शरणागति में द्विचित्तता का आभाव होता है।

वह पूरी तरह से एक मात्र भगवान् का ही आश्रय लेता है। शरणागत को भगवान् स्वयं संभाल लेते हैं और उसकी पूरी ज़िम्मेदारी भगवान् ले लेते हैं।

जो भी भगवान् ने दिया है उसके लिये भगवान् को धन्यवाद देना है और उन्हीं पर पूरी तरह से आश्रित होना है। अपने और भगवान् के सम्बन्ध को पहचानने से हम –

1. निश्चिन्त हो जायेंगे,
2. निर्भय हो जायेंगे,
3. नि:शोक हो जायेंगे,
4. नि:शंक हो जायेंगे।

हमें साधन-सम्मिश्रण से बचना चाहिए। हमारी साधना के मार्ग में चलने के लिये चार बातें आवश्यक हैं – पुकार, प्रयत्न, प्रतीक्षा और प्रसाद। जब सभी कुछ होते हुए भी हमारे मन में व्याकुलता का भाव हो तो हमारे मन में पुकार की जागृति होती है। सत्संग के माध्यम से हमारी पुकार तीव्र हो जाती है।

गुरुदेव महाराज ने बताया है कि साधना में मेरी सहायता तथा पथ-प्रदर्शन पाने के लिये व्यक्ति को मुझ से केवल कुछ ही बातों में सहमति आवश्यक है और वे हैं –

1. दैविक शक्ति के अस्तित्व में विश्वास,
2. दैविक अनुकम्पा में विश्वास, और
3. नाम में विश्वास।

माँ ही सब कुछ है, नाम माँ की कृपा का वाहन है।

बहन रमना सेखड़ी जी

आज हमारे बीच में गुरुदेव सूक्ष्म में हम सभी के साथ हैं और आवश्कतानुसार हमारा मार्गदर्शन करते रहते हैं। गीता के अध्याय 15 के श्लोक 5 का भावार्थ करते हुए पूज्य बहन जी ने समझाया कि सर्वप्रथम हमें अपने मान को छोड़ना चाहिए। उसके बाद हमें मोह का परित्याग करना है क्योंकि मोह के वश में होकर व्यक्ति अनेक गलतियाँ करता है। साथ ही अपने को कुसंग से भी बचाना है। जितना हम प्रभु से जुड़ते हैं उतना संसार से दूर होते जायेंगे और जब संसार से आसक्ति होती है तो प्रभु से दूर होते जायेंगे। जब हम राग-द्वेष से दूर हो जायेंगे तो हमारा अनुराग प्रभु से हो जायेगा।

हमारी कामनाओं का अन्त नहीं है इसलिये हमें इच्छाओं को कम करना चाहिए। सुख और दु:ख में सम रहना है क्योंकि हम शरीर नहीं हैं आत्मा हैं। अध्यात्म के मार्ग पर वही व्यक्ति जा सकता है जिसे प्रभु की विशेष कृपा प्राप्त होती है। हम साधकों को इन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए –

1. जो साधक साधन-सम्पन्न होते हैं वे विकास के मार्ग पर आगे बढ़ते चले जाते हैं।
2. व्यक्ति स्वयं को मान-अपमान और सुख-दु:ख आदि द्वंद्वों से दूर रखे।
3. हमें भगवान् से भक्ति माँगनी है क्योंकि भक्ति अलौकिक है।
4. हमें अपनी शक्ति और समय का सदुपयोग करना चाहिए। हर समय जाप करें और गीता, रामायण आदि का पाठ करें।
5. प्रभु के चरणों में जुड़ने से हमारी कामनायें धीरे-धीरे शान्त होती चली जाती हैं जिससे साधक भगवान् के अव्यय पद को प्राप्त कर लेता है।

श्री विष्णु कुमार गोयल जी

गीता के अध्याय 2 के श्लोक 66 में बताया गया है –

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।

गुरुदेव भगवान् बताते हैं कि जो प्रभु से युक्त नहीं है उसकी बुद्धि स्थिर नहीं है। युक्त वह है जिसकी बुद्धि समाहित और सन्तुलित है। उसकी अनाप-शनाप चेष्टायें नहीं होती। जिसमें विवेक जागृत नहीं होता है वह युक्त नहीं है। राग-द्वेष से रहित व्यक्ति ही परमात्मा से युक्त है। जो युक्त नहीं है उसमें रचनात्मक शक्ति नहीं होती है। चंचलता व्यक्ति को अयुक्त बनाती है। भावना से युक्त व्यक्ति ही सभी को सम्मान दे पाता है। स्थिर रूप से श्रद्धा का आना ही भावना है।

समर्पण के लिये श्रद्धा और भावना आवश्यक है। जब हम एकमुख होकर समर्पण करते हैं तो भावना और श्रद्धा स्वतः ही आने लगती है। सत्संग से ही श्रद्धा पुष्ट होती है और हमारे आगे का मार्ग खुलता चला जाता है। गुरुदेव की पुस्तकों को पढ़ने से, महापुरुषों का चरित्र पढ़ने से हमारी मानवता का स्तर ऊँचा उठता है। सुख आन्तरिक समता का परिचायक है। सुख दुःख का चक्र हमेशा चलता रहता है। शान्ति सुख का स्रोत है।

गुरुदेव ने **'हमारी उपासना'** में लिखा है –

राम नाम प्रभु कृपा का वाहन है। निष्ठा प्रतिकूलता के समय बहुत आवश्यक है इसलिये हमें अपनी निष्ठा और भावना को दृढ़ करना है।

श्री आर.सी. गुप्ता जी

गुरु वंदना के पश्चात् श्री गुप्ता जी ने बताया कि गीता एक ऐसा शास्त्र है जो भगवान् ने समझाया तो था अर्जुन को युद्ध के मैदान में किन्तु यह उपयोगी है प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रत्येक क्षेत्र में और प्रत्येक परिस्थिति में। यह एक ऐसा उपनिषद् है जिसमें सब वेदों का सार है। इसीलिये इस को समझना सरल नहीं है किन्तु यदि योग्य गुरु समझायें तो इसे आसानी से समझा जा सकता है। और गुरु तभी समझाते हैं जब हम उनकी शरण में जाते हैं जैसे अर्जुन ने कहा था –

शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।

गीता में यद्यपि 18 अध्यायों में 18 योग बताये गये हैं किन्तु ईश्वर की प्राप्ति के लिये मुख्यतः कर्मयोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग तथा भक्तियोग बताये हैं। गीता का मुख्य उद्देश्य है मानव को मानव बनाना।

गीता संसार में रहते हुए ही भगवान् की प्राप्ति का मार्ग दिखाती है। गीता बताती है कि फल की आसक्ति को त्यागकर निज कर्तव्य का पालन करना ही मनुष्य का परम धर्म है। किन्तु विडम्बना यह है कि भगवान् की प्राप्ति के लिये साधारण मनुष्य गीता में बताये गये सरल मार्ग को छोड़कर न जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहता है और मनमाने आचरण अपना कर अपने किये का फल भोगता रहता है और आरोप लगाता है भगवान् पर।

अध्याय 2 में भगवान् बताते हैं कि अर्जुन जिनकी मृत्यु की कल्पना से तू शोकग्रस्त हो रहा है उनके केवल शरीर ही नष्ट होंगे, आत्मा नहीं। शरीर तो नश्वर है जिसको नष्ट होना ही है। जीवात्मा जीवन की अवधि समाप्त होने पर शरीर को इस प्रकार बदल लेता है जैसे मनुष्य जीर्ण वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण कर लेता है। इसी बात को अध्याय 8 व 15 में और विस्तार से समझाया गया है कि मृत्यु के समय मनुष्य जिस भाव में स्थित होता है उसी के अनुसार उसे अगला जन्म मिलता है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। जिस प्रकार वायु गन्ध को उड़ाकर ले जाती है उसी प्रकार जीवात्मा इन्द्रियों को उनकी अतृप्त वासनाओं के साथ उड़ाकर नये शरीर में ले जाता है।

किन्तु समय की माँग के अनुसार इस आधारभूत ज्ञान से अर्जुन की तृप्ति होने वाली नहीं थी। यहाँ प्रश्न यह था कि गुरुजनों व सगे सम्बन्धियों को मारने से जो पाप लगेगा उससे कैसे बचा जाये। तब भगवान् समझाते हैं कि पाप और पुण्य का निर्धारण समय और परिस्थिति के आधार पर होता है। परिस्थिति के अनुसार अपने कर्तव्य का पालन करना ही धर्म

है जिससे पाप नहीं लगता है। युद्ध के क्षेत्र में शत्रु पक्ष में खड़े योद्धाओं पर आक्रमण करना ही धर्म है, चाहे वे योद्धा कोई भी हों और परिणाम कुछ भी हो। मनुष्य के वश में केवल कर्म करना है, फल पर उसका कोई अधिकार नहीं है।

यहाँ भगवान् अर्जुन को स्थितप्रज्ञ होकर निर्णय लेने का उपदेश देते हैं। स्थितप्रज्ञ अर्थात् पक्षपात से रहित होकर समभाव में स्थित होना। यहाँ मन में उत्पन्न होने वाली समस्त कामनाओं को त्यागकर प्राप्त परिस्थिति को स्वीकार करके कदम उठाने का निर्देश दिया है; क्योंकि कामनायें असंख्य होती हैं और बुद्धि को विचलित करती रहती हैं। ममता और अहंकार, राग और द्वेष, भय और क्रोध – ये सब मन के विकार हैं। इनसे बचने के लिये भगवान् कुछ समय ध्यान में बैठने का अभ्यास करने का परामर्श देते हैं।

इसी अध्याय में अर्जुन सब कुछ छोड़कर भिक्षा का अन्न खाने को उद्यत दिखाई पड़ता है। अर्जुन की इसी सोच का निराकरण करने के लिये भगवान् कर्मयोग का उपदेश देते हुए कहते हैं कि कर्म करना तो मानव का परम धर्म है क्योंकि कर्म के बिना तो सृष्टि चल ही नहीं सकती। और जहाँ तक पाप का प्रश्न है, तो इतना समझ लो कि कर्तव्य से विमुख होने से पाप लगता है, न कि करने से। ठीक है सभी कर्म बन्धन का कारण हैं किन्तु जो कर्म स्वार्थरहित होकर, परमार्थ के लिये, बिना कर्तृत्व की भावना के, बिना फल की इच्छा के किये जाते हैं, ऐसे कर्म यज्ञार्थ कर्म कहे जाते हैं। ये कर्म कर्मयोग हो जाते हैं जो मोक्ष के कारक होते हैं। यज्ञ, तप और दान अवश्य करणीय कर्म बताये गये हैं।

संन्यास और संन्यासी के विषय में भगवान् का स्पष्ट मत है कि – 'जो पुरुष न किसी से द्वेष करता है, न कोई आकांक्षा करता है, राग-द्वेष आदि से रहित है, वह कर्मयोगी सदा संन्यासी ही समझने योग्य है।' (5.3) (तथा जो पुरुष कर्मफल का आश्रय न लेकर करने योग्य कर्म करता है, वह संन्यासी तथा योगी है। (6.1) अर्थात् कर्म करते हुए भी संन्यासी है। ईश्वर की प्राप्ति के लिये कर्मयोग का आश्रय लेने वाले साधकों के लिये श्रेष्ठ कर्मों का आचरण करना, राग-द्वेष आदि द्वंद्वों से मुक्त होना तथा अपने निश्चय में दृढ़ होना अति आवश्यक है। (7.28) उतना ही आवश्यक है दुष्कर्मों से बचना। श्रेष्ठ कर्म और दुष्कर्मों का वर्णन भी गीता में किया गया है जो इस प्रकार है –

सत्कर्म – अहिंसा, सत्य, प्रिय भाषण, दया, कोमलता, सरलता, लज्जा, तेज, क्षमा, धैर्य, अन्तःकरण की शुद्धि, पवित्रता, देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानीजनों का पूजन, ब्रह्मचर्य का पालन, सात्विक दान आदि।

दुष्कर्म – दम्भ, अभिमान, अहंकार, क्रोध, कठोरता, कामनाओं, वासनाओं, आलस्य के अधीन होना, विषय-भोगों के लिये धन-संग्रह करना, द्व ेष, शत्रुता रखना, स्वयं को ही श्रेष्ठ मानना, दूसरों का अकारण अनिष्ट करना या प्रतिशोध की भावना रखना, बिना विचारे कार्य करना, अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ के विरुद्ध कार्य करना आदि।

इसके अतिरिक्त भगवान् ने गीता के अध्याय 4 श्लोक 13 में बताया है कि **'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः'** – अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र – ये चार वर्ण मेरे द्वारा रचे गये हैं। इन वर्णों के स्वाभाविक कर्म अध्याय 18 में इस प्रकार बताये गये हैं –

ब्राह्मण – शम, दम, तप, शौच, क्षमा, मन, इन्द्रिय और शरीर की सरलता, आस्तिकता, ज्ञान और विज्ञान।

क्षत्रिय – शूरवीरता, तेज, धैर्य, युद्ध से न भागना, दान देना और स्वामिभाव।

वैश्य – खेती, पशुपालन, व्यापार, उद्योग।

शूद्र – सब वर्णों की सेवा करना।

अब प्रश्न उठता है कि ये सब कर्म करने से मनुष्य को कौन रोकता है। इसके उत्तर में भगवान् कहते हैं कि माया (अथवा प्रकृति के तीन गुण) मनुष्य को कर्तव्य से विचलित करते हैं। साथ ही

बताया कि इस माया से पार पाना अत्यन्त दुष्कर है; परन्तु जो भक्त केवल भगवान् के ही आश्रित हैं, वे इसको पार कर सकते हैं। अध्याय 9 में तो भगवान् मनुष्य के योगक्षेम का भार भी स्वयं वहन करने का वचन देते हैं।

यदि मनुष्य नित्य-निरन्तर भगवान् का चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजन करे। भगवान् ने बताया कि उनको सरल-हृदय भक्त अतिशय प्रिय हैं। जो उनको प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, भगवान् वह सब स्वीकार करते हैं। ईश्वर को प्राप्त करने के लिये अधिक कुछ करने की आवश्यकता नहीं है, इसलिये भगवान् कहते हैं कि हे मनुष्य, तू जो भी कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है, जो तप करता है वह सब मेरे अर्पण कर।

इस प्रकार सब लोग अपना-अपना कार्य करके यदि सभी कार्यों को भगवान् के अर्पित कर दें तो यह कर्मों द्वारा भगवान् की पूजा हो जायेगी जिससे परम सिद्धि को प्राप्त किया जा सकता है। (गीता 18.46) गीता के अन्त में तो भगवान् ने अर्जुन को स्पष्ट शब्दों में आदेश ही दे दिया –

'मुझ में मन वाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो और मुझको प्रणाम कर – इससे तू मुझको ही प्राप्त होगा', तथा

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझ में त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।

❖ ❖ ❖

आम सभा की बैठक की कार्यवाही

साधना परिवार की आम सभा की बैठक साधना धाम हरिद्वार के प्रांगण में दिनांक 20 अप्रैल 2024 की रात्रि 9:00 बजे गुरु वन्दना के साथ श्री विष्णु कुमार गोयल जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। इस बैठक में 67 सदस्य उपस्थित थे। सर्वप्रथम गत वर्ष की आम सभा की बैठक तथा उसके बाद होने वाली कार्यकारिणी की सभी बैठकों की कार्यवाही की रिपोर्ट श्री सुधीर कान्त अग्रवाल द्वारा पढ़कर सुनाई गई जिनका अनुमोदन सभी उपस्थित साधकों द्वारा किया गया। अध्यक्ष महोदय ने वर्ष भर में साधना परिवार में होने वाली सभी गतिविधियों में साधकों द्वारा दिये गये सहयोग के लिये आभार व्यक्त किया और उसके बाद साधकों से सुधार के लिये सुझाव आमन्त्रित किये। एक सुझाव आया कि नियुक्त की गई समितियों को अपना कार्यभार निर्धारित समय पर पूरा करने पर ध्यान दिया जाये। नियमावली समिति द्वारा दी गई रिपोर्ट को कार्यान्वित किया जाये। एक साधक द्वारा सुझाव दिया गया कि जिन साधकों ने पूरा शिविर न किया हो उनसे पूरी फीस न ली जाये। अध्यक्ष महोदय ने इस बिन्दु पर विचार करने का आश्वासन दिया।

एक अन्य विषय विचार विमर्श के लिये यह आया कि दिवंगत साधकों की अस्थियाँ साधना मन्दिर में ले जाने की अनुमति दी जाये या नहीं। इस विषय पर साधकों से राय लेने के पश्चात् बहुमत के आधार पर यह निर्णय लिया गया कि यदि किसी साधक की अस्थियाँ धाम में आती हैं तो उसे रोका न जाये वरन उनको साधना मन्दिर परिसर में न ले जाकर धाम में कहीं और निर्धारित स्थान पर रखकर मन्दिर में शान्ति पाठ करवाकर गुरु चरणों में अर्पित श्रद्धा सुमन बाहर लाकर अस्थियों पर चढ़ाये जायें।

अन्त में पूर्ति मन्त्र के साथ सभा का समापन किया गया।

विष्णु कुमार गोयल
(अध्यक्ष)

रमना सेखड़ी
(सचिव)

कार्यकारिणी की बैठक का विवरण

कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 19 अप्रैल 2024 को प्रातः 11:00 बजे साधना धाम हरिद्वार के कार्यालय में श्री विष्णु कुमार जी गोयल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे –

1.	श्री विष्णु कुमार गोयल	अध्यक्ष
2.	श्रीमती सुशीला जायसवाल	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
3.	श्री अनिल चन्द्र मित्तल	उपाध्यक्ष
4.	श्रीमती रमना सेखड़ी	सचिव
5.	श्री रमेश चन्द्र गुप्त	संयुक्त सचिव
6.	श्रीमती कृष्णा भण्डारी	सदस्य
7.	श्रीमती सोमवती मिश्रा	सदस्य
8.	श्रीमती कमला सिंह वर्मा	सदस्य
9.	श्रीमती अरुणा पाण्डेय	सदस्य
10.	श्री जगत सिंह	सदस्य
11.	श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल	सदस्य
12.	श्री सुधीर कान्त अग्रवाल	सदस्य
13.	श्री रवि कान्त भण्डारी	प्रबन्धक
14.	श्री राजीव रतन सिंह	विशेष आमन्त्रित सदस्य
15.	श्री संजय सेखड़ी	विशेष आमन्त्रित सदस्य

पूज्य गुरुदेव जी की वन्दना के पश्चात् बैठक की कार्यवाही आरम्भ की गई। सर्वप्रथम पिछली बैठक का कार्यवृत्त पढ़कर सुनाया गया जिसकी पुष्टि सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा की गई। तत्पश्चात् एजेंडा के अनुसार आगे बढ़ते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया गया –

1. दिगोली तपस्थली पर होने वाले निर्माण कार्य में प्रगति की रिपोर्ट देते हुए अध्यक्ष जी ने बताया कि बरामदे बनने के समय पीछे की पहाड़ी आने से काम बढ़ गया तथा चार कमरे और आठ बाथरूम बनाने आवश्यक हो गये जिसमें लगभग 45 लाख रुपये का अतिरिक्त खर्च आने की सम्भावना है। सदस्यों ने इस कार्य को पूरा करने के लिये सहमति दी।
2. साधना धाम हरिद्वार के भवन में वाटर प्रूफिंग, पेंटिंग तथा निर्माण एवं मरम्मत कार्य के लिये जो राशि खर्च होने की सम्भावना है वह पहले से स्वीकृत 7 लाख रुपये के बजट से 15 लाख रुपये अधिक है। यह बजट कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा मंजूर किया गया।
3. अनुमानित तुलन पत्र उपलब्ध न होने के कारण उसे देखने तथा विवेचन करने का कार्यक्रम अगली बैठक तक स्थगित किया गया।
4. माँ सुमित्रा चिकित्सालय में नव-नियुक्त चिकित्सक का वेतन तथा बोनस निर्धारित करने के लिये अध्यक्ष महोदय को अधिकृत किया गया।
5. 'हमारी साधना' पत्रिका के वितरण के लिये चार केन्द्रों पर सीधे भेजने का निर्णय लिया गया।

इसके पश्चात् पिछली बैठक से अब तक जिन साधक, साधिकाओं ने अपनी नश्वर देह को त्याग कर गुरु चरणों की शरण ली है उन सभी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई –

1. श्रीमती जनक दुलारी, कानपुर
2. श्रीमती रतिकान्ता अग्रवाल, बरेली
3. श्री सुनील कान्त अग्रवाल, पीलीभीत
4. श्री कपिश पाण्डे, बीसलपुर

बैठक के अन्त में गुरु महाराज का भोग लगाकर पूर्ति मन्त्र बोला गया और प्रसाद वितरण करके अध्यक्ष जी द्वारा सभी उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद करके सभा का विसर्जन किया गया।

विष्णु कुमार गोयल
(अध्यक्ष)

रमना सेखड़ी
(सचिव)

शोक समाचार

समस्त साधना परिवार को अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि,

कानपुर निवासी जनक दुलारी जी का देहावसान दिनांक 13 फरवरी 2024 को हो गया है।

❖ ❖ ❖

वरिष्ठ साधिका श्रीमती सुनीति अग्रवाल जी की 74 वर्षीय बड़ी पुत्रवधु श्रीमती रतिकान्ता अग्रवाल (बरेली) का देहावसान दिनांक 5 मार्च 2024 को हो गया है।

❖ ❖ ❖

वरिष्ठ साधिका श्रीमती सुनीति अग्रवाल जी के मंझले पुत्र श्री सुनील कान्त अग्रवाल जी दिनांक 10 अप्रैल 2024 को अपनी नश्वर देह को त्याग कर गुरु धाम को प्रस्थान कर गये हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें और परिवार जनों को दु:ख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

❖ ❖ ❖

बीसलपुर निवासी 28 वर्षीय श्री कपिश पाण्डे जी का देहावसान दिनांक 18 अप्रैल 2024 को हो गया है।

❖ ❖ ❖

पीलीभीत निवासी श्रीमती सुनीति देवी अग्रवाल दिनांक 15 मई 2024 को अपनी नश्वर देह को त्याग कर भगवत् धाम को प्रस्थान कर गई हैं।

पूज्य माता जी का जन्म 11 सितम्बर 1927 को हुआ था। आप गत कुछ वर्षों से अस्वस्थ थीं और साधना धाम हरिद्वार में वास कर रही थीं। आप और आपके पति स्वर्गीय श्री सत्यदेव जी अति वरिष्ठ साधक थे। श्री सत्यदेव जी अपने समय के प्रसिद्ध वैद्य थे जिन्होंने बहुत समय तक असहाय रोगियों की नि:शुल्क सेवा की थी।

❖ ❖ ❖

पूज्य गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा इनके परिवार जनों को इनका वियोग सहने की यथायोग्य शक्ति प्रदान करें। साधना परिवार के सभी साधक भाई-बहन अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

श्रीमती सुनीति देवी के प्रति श्रद्धांजलि

परम पूजनीय मेरी माँ,

मेरा कोटि कोटि प्रणाम स्वीकार हो।

माँ आपके साथ बिताया गया अमूल्य समय मेरे जीवन का बहुत बड़ा शिक्षाप्रद मार्ग है।

परम पिता परमेश्वर से मुझे पूरी उम्मीद है, विश्वास है कि आपका प्यार और आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहेगा और मेरा मार्गदर्शन करता रहेगा। भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ आपके चरणों में।

आपकी बिटिया,

कुसुम माहेश्वरी

14.2.24 से 21.5.24 तक के 2100/- से ऊपर दानदाताओं की सूची

साधकगण अपने दान की राशि चैक द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में जमा करवा सकते हैं।

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
BANK OF INDIA,
Haridwar
A/c No.: 721010110003147
I.F.S. Code: BKID0007210

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
HDFC BANK,
Bhoopatwala, Saptrishi Chungi, Haridwar
A/c No.: 50100537193693
I.F.S. Code: HDFC0005481

साधना धाम का PAN नम्बर AAKAS8917M है।

कृपा करके जमा करवाई हुई राशि का विवरण एवं अपना नाम और पता तथा PAN या आधार कार्ड नम्बर, पत्र, फोन, E-mail अथवा WhatsApp द्वारा साधना धाम कार्यालय में अवश्य सूचित करें। जिससे आपको रसीद आसानी से प्राप्त हो जायेगी।

– **रवि कान्त भण्डारी,** प्रबन्धक, साधना धाम, मोबाइल: 09872574514, 08273494285

1.	सतीश खोसला, दिल्ली	100000
2.	विष्णु/सुशीला जयसवाल, मुम्बई	100000
3.	सुनीलकान्त/प्रीति अग्रवाल, पीलीभीत	100000
4.	सुशीला/विष्णु जयसवाल, मुम्बई	100000
5.	आर.के. मेहरोत्रा, दिल्ली	90000
6.	तृप्ता रानी (हरिओम सत्संग), दिल्ली	51000
7.	वैभव गुप्ता पुत्र शोभा गुप्ता, देहरादून	51000
8.	दिनांक 11.04.24 को दान पेटी से	50985
9.	सुनीता कपूर, दिल्ली	31000
10.	सतीश खोसला, दिल्ली	21000
11.	पूजा सिंघल, दिल्ली	21000
12.	विष्णु गौड़ (गुप्त नाम)	21000
13.	जेनी मेहरोत्रा, गुरूग्राम	15000
14.	उमा गर्ग, मुम्बई	13000
15.	अशोक शर्मा, लखनऊ	11000
16.	सुनील कान्त अग्रवाल, पीलीभीत	11000
17.	कृष्णकान्त, बरेली	11000
18.	देवांग बहल	11000
19.	विष्णु/सुशीला जयसवाल, मुम्बई	11000
20.	सचिन अग्रवाल, फरीदाबाद	11000
21.	अजय कुमार अग्रवाल, बरेली	11000
22.	राजन धाम, नई दिल्ली	11000
23.	मंजू गुप्ता उर्फ शोभा गुप्ता, देहरादून	11000
24.	रमेश गेरा, दिल्ली	8000
25.	चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	7100
26.	मंजू बस्सी, गोविन्दगढ़	6200
27.	महेश/शान्ति	5151
28.	उमा अग्रवाल, मेरठ	5100
29.	दक्ष अरोड़ा, नई दिल्ली	5100
30.	डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	5100
31.	रीता सिंह, कानपुर	5100
32.	राजीव रतन सिंह, हरदौली	5100
33.	रुचि सिंह, शाहजहाँपुर	5100
34.	प्रभाकर शुक्ला, कानपुर	5100
35.	के.सी. मित्तल, फरीदाबाद	5100
36.	राकेश चन्द्र मित्तल, बीसलपुर	5100
37.	मोहन लाल अग्रवाल, बंगलोर	5100
38.	रमेश चन्द्र गुप्ता, गाजियाबाद	5100
39.	संजय अग्रवाल, फरीदाबाद	5100
40.	शिवम अग्रवाल, फरीदाबाद	5100
41.	निशान्त सिंह, दिल्ली	5100
42.	कुसुम सिंह, लखनऊ	5100
43.	गुप्तदान	5100

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(14.2.2024 से 21.5.2024 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

44.	कमल किशोर तिवारी, कानपुर	5100	78.	कन्हैया के लिए रसोई गैस, हरिद्वार	3400
45.	चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	5100	79.	अजय कुमार भण्डारी, अमृतसर	3100
46.	शिवम अग्रवाल, फरीदाबाद	5100	80.	अजय आनन्द, गाजियाबाद	3100
47.	बृजेश मोदी, मुम्बई	5001	81.	अविनाश अरोड़ा, दिल्ली	3100
48.	सुधा आहूजा, गुरूग्राम	5000	82.	विपिन कुमार, बरेली	3100
49.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5000	83.	विजय माहेश्वरी, कानपुर	3100
50.	सुनीति देवी अग्रवाल, पीलीभीत	5000	84.	सी.एम. शर्मा, नई दिल्ली	3100
51.	अनुराग कुमार, बंगलोर	5000	85.	अनु घई, दिल्ली	3100
52.	अनिल चन्द्र मित्तल, बीसलपुर	5000	86.	रमेश गेरा, दिल्ली	3000
53.	अंकुर अग्रवाल, दिल्ली	5000	87.	कमल तिवारी, कानपुर	3000
54.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5000	88.	सुरभि जयसवाल, कानपुर	3000
55.	स्वीटी देवी, कनखल	5000	89.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500
56.	उमेश पोद्दार, काशीपुर	5000	90.	शशि अग्रवाल, कनखल	2500
57.	सुनीति देवी, पीलीभीत	5000	91.	शालू शाह, मुम्बई	2500
58.	हरपाल सिंह, हरिद्वार	5000	92.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500
59.	सुधीर कुमार अवस्थी, कानपुर	5000	93.	प्रीति अग्रवाल, पीलीभीत	2500
60.	कमला वर्मा, कानपुर	5000	94.	आर.के. गुप्ता, हल्द्वानी	2500
61.	सुनीति देवी, पीलीभीत	5000	95.	अंकुर अग्रवाल, दिल्ली	2100
62.	सुधीर कुमार अवस्थी, मेरठ	5000	96.	मनोज कुमार मेहरा, दिल्ली	2100
63.	हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	5000	97.	राज कुमार चावला, दिल्ली	2100
64.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5000	98.	सुरेन्द्र के. अग्रवाल, बीसलपुर	2100
65.	उमेश पोद्दार, काशीपुर	5000	99.	डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	2100
66.	अजय कुमार अग्रवाल, बरेली	5000	100.	अंकुर अग्रवाल, दिल्ली	2100
67.	कुसुम महेश्वरी, मुम्बई	5000	101.	सचिन जयसवाल, बीसलपुर	2100
68.	सचिन अग्रवाल, फरीदाबाद	5000	102.	रोहित महाजन, नोएडा	2100
69.	मीना बिजलवान, हरिद्वार	4800	103.	दीया शर्मा, दिल्ली	2100
70.	रंजना शर्मा/अशोक शर्मा, पीलीभीत	4100	104.	विवेक चण्डोक, फरीदाबाद	2100
71.	राजेश गुप्ता, दिल्ली	4100	105.	अजित अग्रवाल, बीएचईएल, हरिद्वार	2100
72.	वीरेन्द्र कुमार चौहान, मेरठ	4100	106.	डा. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	2100
73.	विष्णु अग्रवाल	4001	107.	कृष्णा देवी, काशीपुर	2100
74.	हरिओम सत्संग ग्रुप, दिल्ली	4000	108.	पुष्पा गौड़, लखनऊ	2100
75.	मिथलेश, अलवर सत्संग केंद्र, अलवर	4000	109.	अनिल कुमार गुप्ता, हरदौली	2100
76.	विष्णु अग्रवाल, बरेली	3501	110.	दीपक त्रिपाठी, दिल्ली	2100
77.	राजेश गुप्ता, दिल्ली	3500			

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(14.2.2024 से 21.5.2024 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

111. अनिरुद्ध/राखी अग्निहोत्री, रुड़की	2100	120. मधु बाला गर्ग, हरिद्वार	2100
112. प्रतीक दीक्षित, नोएडा	2100	121. विपिन कुमार पाण्डे, बीसलपुर	2100
113. कमला वर्मा, कानपुर	2100	122. विनय कुमार गुप्ता, कानपुर	2100
114. सूरजभान सक्सैना, कानपुर	2100	123. इशिका सुपुत्री गौरव मित्तल, बरेली	2100
115. कान्ति सिंह, कानपुर	2100	124. पंकज अग्रवाल, मुरादाबाद	2100
116. प्रेम लता, कानपुर	2100	125. गुप्तदान	2100
117. सरस्वती सिन्हा, तिलहर	2100	126. नीता सहगल, नई दिल्ली	2100
118. रिचा अग्रवाल, फरीदाबाद	2100	132. गुप्तदान	2100
119. मीना बिजलवान, हरिद्वार	2100	133. गुप्तदान	2100

दिगोली तपस्थली शिविर-2024 - विवरण

दिगोली तपस्थली में 12 से 15 मार्च 2024 तक शिविर का आयोजन किया गया, यद्यपि साधकगण 10 मार्च से ही पहुँचने आरम्भ हो गये थे। 12 मार्च को दोपहर 3:30 बजे सभी साधकगण साधना मन्दिर में एकत्रित हुए जिनकी उपस्थिति में शिविर के सभी कार्यक्रम निर्धारित किये गये और रात्रि के जाप की ड्यूटियाँ लगाई गईं। उल्लेखनीय है कि दिगोली तपस्थली में पहली बार पूर्ण रात्रि के अखण्ड जाप का आयोजन किया गया। इसके अनुसार सायं 6:00 से 7:00 बजे तक सामूहिक जाप से आरम्भ करके अगले दिन प्रात: 6:00 बजे तक एक-एक घण्टे का जाप दो-दो साधकों द्वारा निर्धारित की गई ड्यूटियों के अनुसार सम्पन्न किया गया। 13 मार्च प्रात: 6:00 से 7:00 बजे तक सामूहिक जाप के साथ इसकी पूर्ति की गई।

उसके पश्चात् चाय बिस्कुट, व्यायाम, भ्रमण, स्नान व निजी आवश्यकता के अनुसार अन्य कार्य किये जाते थे। शिविर के शेष दिनों में इसी समय-सारणी की पुनरावृत्ति होती रही। 8:00 बजे अल्पाहार, 9:00 बजे गीता पाठ व 9:30 बजे प्रवचन का सत्र होता था। 13 मार्च को श्रीमती रमना सेखड़ी जी द्वारा प्रवचन हुआ तथा 14 मार्च को गीता पाठ के बाद कानपुर से पधारे श्री योगेन्द्र जी पाण्डेय ने बहुत ही रोचक शब्दों में रामायण की व्याख्या की। दोपहर 12:00 बजे भोजन होता था।

भोजन की तैयारी सभी उपस्थित साधकों द्वारा मिलजुल कर की जाती थी। 13 मार्च को अपराह्न 3:30 बजे से 4:30 बजे मन्दिर में आसपास के गाँवों के लोगों द्वारा वाद्य यन्त्रों के साथ भजन कीर्तन किया गया जिसमें भाव विभोर करने वाले भजन गाये गये। इस बीच कुछ साधक जागेश्वर महादेव दर्शन हेतु प्रस्थान कर गये थे। रात्रि के भोजन के पश्चात् 7:00 से 8:00 बजे तक विनोद गोष्ठी होती थी। इस गोष्ठी में भी श्री योगेन्द्र जी ने सबको भावविभोर किया।

14 मार्च को भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें स्कूलों के छात्र, अध्यापक और गाँवों के लोगों को मिलाकर लगभग 200 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। छात्रों को कॉपी, पैन, बिस्कुट आदि वितरित किये गये।

शिविर में भाग लेने वाले साधक कानपुर, बीसलपुर, बरेली, देहरादून, दिल्ली, गुरुग्राम आदि शहरों से आये थे। सभी साधकों ने श्री गुरु महाराज का धन्यवाद किया और प्रसन्नतापूर्वक प्रसाद ग्रहण करके 15 मार्च को वापिस अपने-अपने स्थान को प्रस्थान किया।

इस शिविर में 45 साधकों ने भाग लिया। दिगोली तपस्थली में गुरु महाराज की असीम कृपा से नवीन भोजनालय व कमरे बनने से अब आवास व भोजन की सुन्दर व्यवस्था हो गई है।

पृष्ठ 39-41 पर छापे गये पत्थर साधना धाम हरिद्वार के प्रवेश द्वार की दीवार पर लगाये गये हैं। इनमें उन दानदाताओं के नाम प्रदर्शित किये गये हैं जिन्होंने स्वामी रामानन्द तपस्थली दिगोली के नवनिर्माण हेतु सन् 2022-23 व 2023-24 में एक लाख रुपये या अधिक की राशि का सहयोग दिया था।

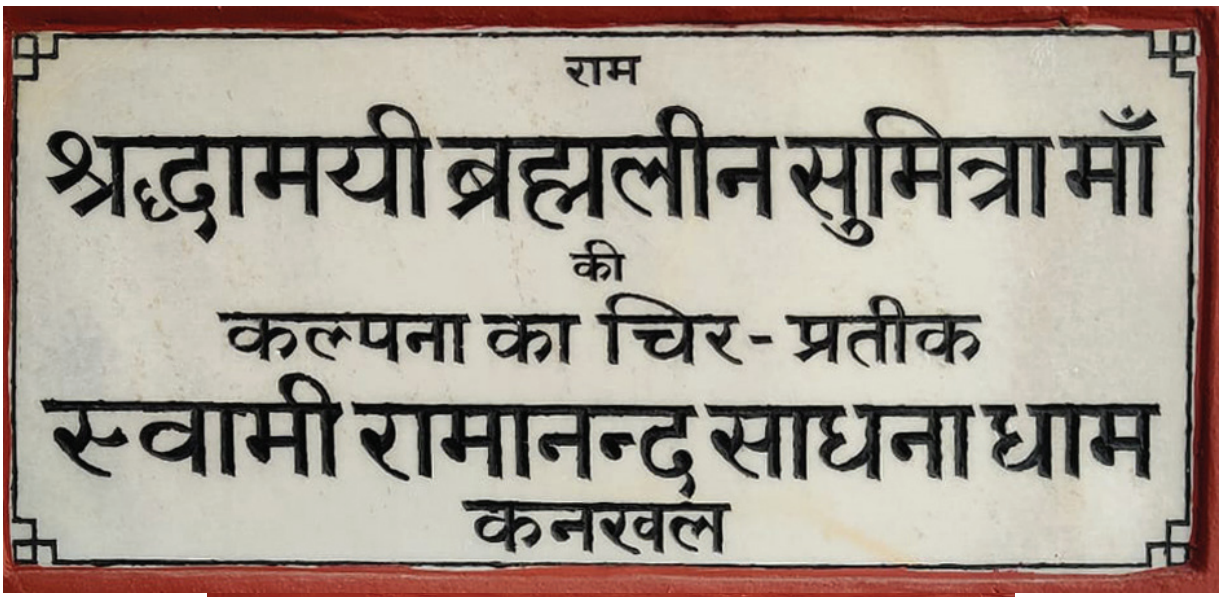

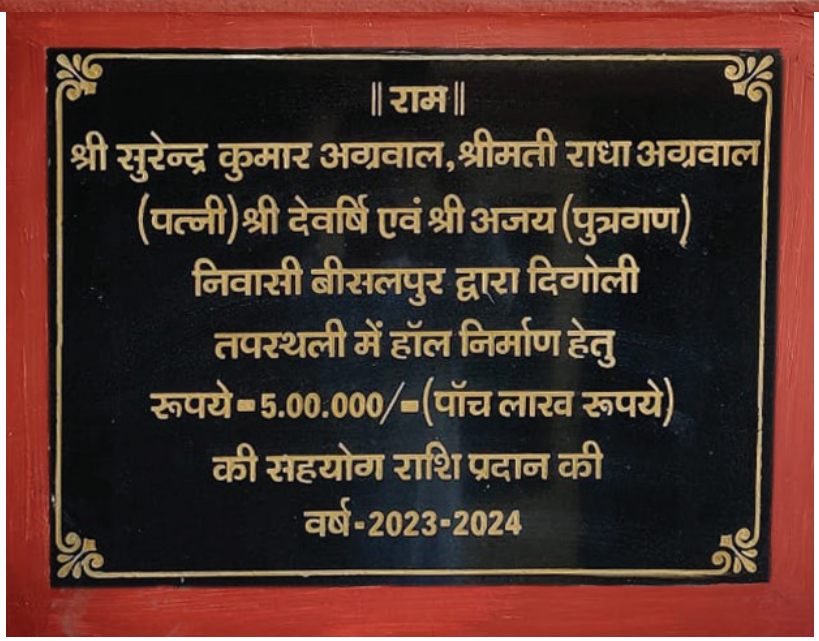

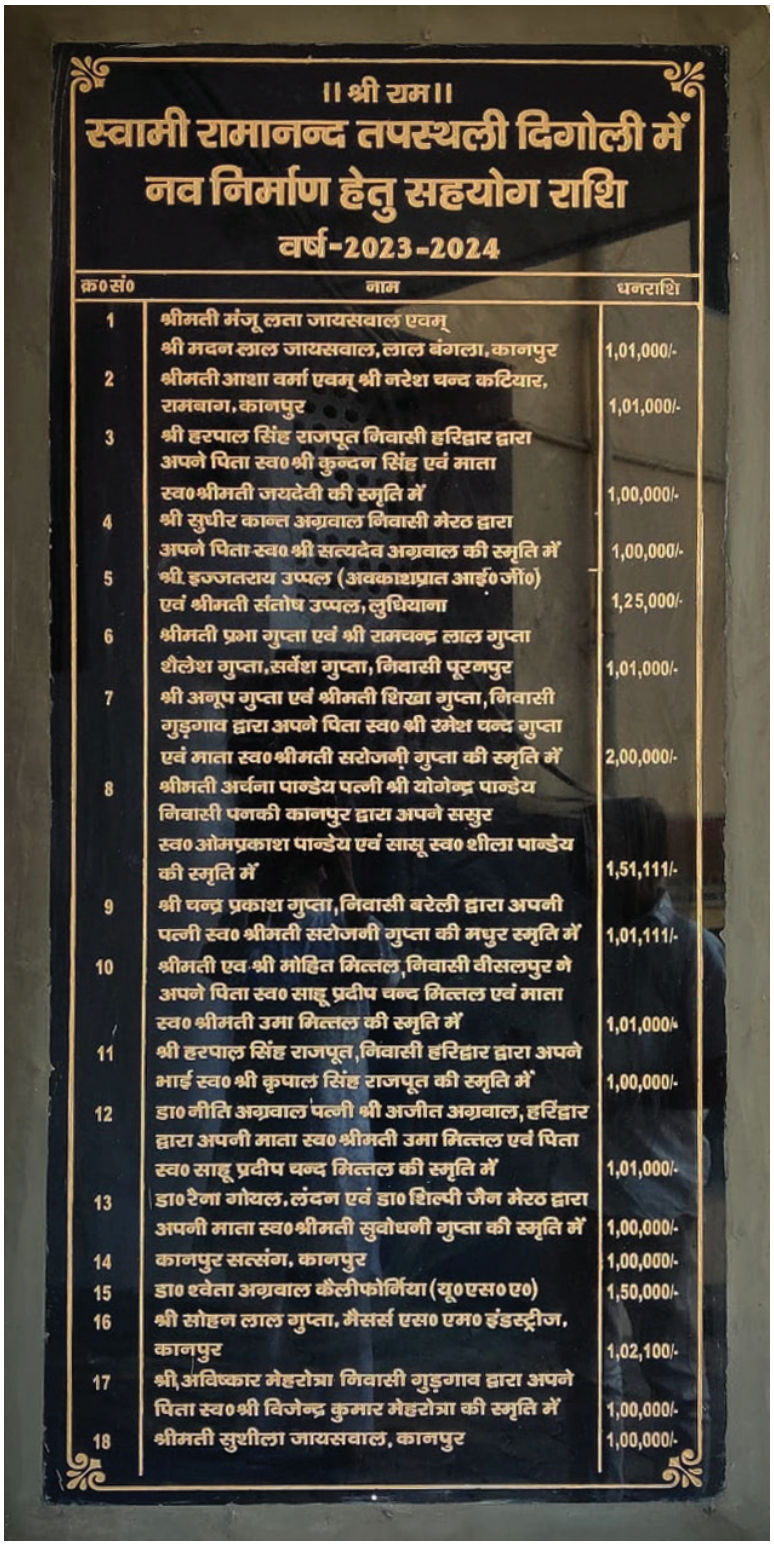

॥ श्री राम ॥

स्वामी रामानन्द तपस्थली दिगोली में नव निर्माण हेतु सहयोग राशि

वर्ष-2023-2024

क्र० सं०	नाम	धनराशि
1	श्रीमती मंजू लता जायसवाल एवम् श्री मदन लाल जायसवाल, लाल बंगला, कानपुर	1,01,000/-
2	श्रीमती आशा वर्मा एवम् श्री नरेश चन्द कटियार, रामबाग, कानपुर	1,01,000/-
3	श्री हरपाल सिंह राजपूत निवासी हरिद्वार द्वारा अपने पिता स्व० श्री कुन्दन सिंह एवं माता स्व० श्रीमती जयदेवी की स्मृति में	1,00,000/-
4	श्री सुधीर कान्त अग्रवाल निवासी मेरठ द्वारा अपने पिता स्व० श्री सत्यदेव अग्रवाल की स्मृति में	1,00,000/-
5	श्री इज्जतराय उप्पल (अवकाशप्राप्त आई० जी०) एवं श्रीमती संतोष उप्पल, लुधियाना	1,25,000/-
6	श्रीमती प्रभा गुप्ता एवं श्री रामचन्द्र लाल गुप्ता शैलेश गुप्ता, सर्वेश गुप्ता, निवासी पूरनपुर	1,01,000/-
7	श्री अनूप गुप्ता एवं श्रीमती शिखा गुप्ता, निवासी गुड़गाव द्वारा अपने पिता स्व० श्री रमेश चन्द गुप्ता एवं माता स्व० श्रीमती सरोजनी गुप्ता की स्मृति में	2,00,000/-
8	श्रीमती अर्चना पान्डेय पत्नी श्री योगेन्द्र पान्डेय निवासी पनकी कानपुर द्वारा अपने ससुर स्व० ओमप्रकाश पान्डेय एवं सासू स्व० शीला पान्डेय की स्मृति में	1,51,111/-
9	श्री चन्द्र प्रकाश गुप्ता, निवासी बरेली द्वारा अपनी पत्नी स्व० श्रीमती सरोजनी गुप्ता की मधुर स्मृति में	1,01,111/-
10	श्रीमती एवं श्री मोहित मित्तल, निवासी बीसलपुर ने अपने पिता स्व० साहू प्रदीप चन्द मित्तल एवं माता स्व० श्रीमती उमा मित्तल की स्मृति में	1,01,000/-
11	श्री हरपाल सिंह राजपूत, निवासी हरिद्वार द्वारा अपने भाई स्व० श्री कृपाल सिंह राजपूत की स्मृति में	1,00,000/-
12	डा० नीति अग्रवाल पत्नी श्री अजीत अग्रवाल, हरिद्वार द्वारा अपनी माता स्व० श्रीमती उमा मित्तल एवं पिता स्व० साहू प्रदीप चन्द मित्तल की स्मृति में	1,01,000/-
13	डा० रैना गोयल, लंदन एवं डा० शिल्पी जैन मेरठ द्वारा अपनी माता स्व० श्रीमती सुवोधनी गुप्ता की स्मृति में	1,00,000/-
14	कानपुर सत्संग, कानपुर	1,00,000/-
15	डा० श्वेता अग्रवाल कैलीफोर्निया (यू० एस० ए०)	1,50,000/-
16	श्री सोहन लाल गुप्ता, मैसर्स एस० एम० इंडस्ट्रीज, कानपुर	1,02,100/-
17	श्री अविष्कार मेहरोत्रा निवासी गुड़गाव द्वारा अपने पिता स्व० श्री विजेन्द्र कुमार मेहरोत्रा की स्मृति में	1,00,000/-
18	श्रीमती सुशीला जायसवाल, कानपुर	1,00,000/-

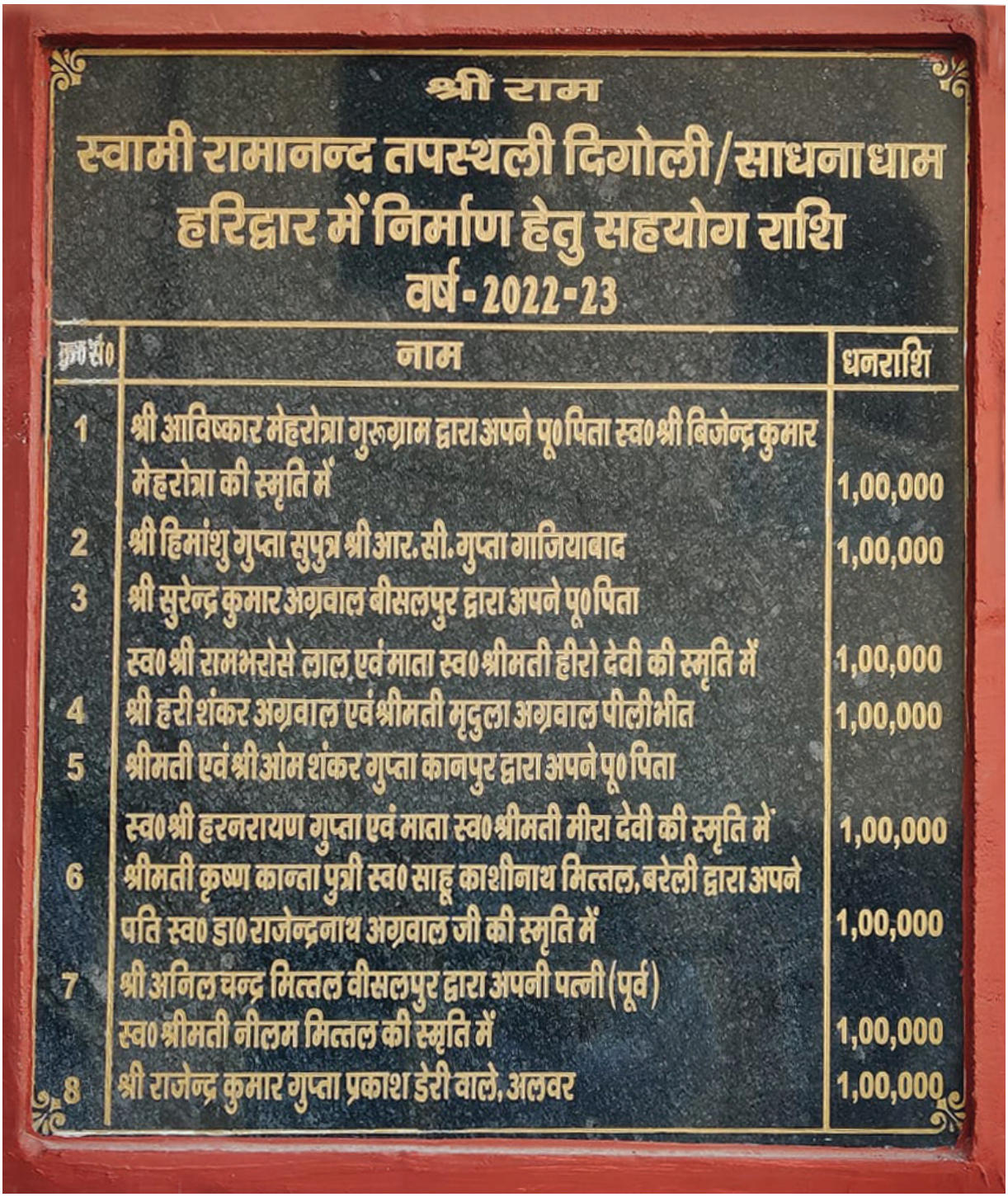

श्री राम

स्वामी रामानन्द तपस्थली दिगोली/साधना धाम हरिद्वार में निर्माण हेतु सहयोग राशि

वर्ष-2022-23

क्र0सं0	नाम	धनराशि
1	श्री आविष्कार मेहरोत्रा गुरुग्राम द्वारा अपने पू0 पिता स्व0 श्री बिजेन्द्र कुमार मेहरोत्रा की स्मृति में	1,00,000
2	श्री हिमांशु गुप्ता सुपुत्र श्री आर. सी. गुप्ता गाजियाबाद	1,00,000
3	श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल बीसलपुर द्वारा अपने पू0 पिता स्व0 श्री रामभरोसे लाल एवं माता स्व0 श्रीमती हीरो देवी की स्मृति में	1,00,000
4	श्री हरी शंकर अग्रवाल एवं श्रीमती मृदुला अग्रवाल पीलीभीत	1,00,000
5	श्रीमती एवं श्री ओम शंकर गुप्ता कानपुर द्वारा अपने पू0 पिता स्व0 श्री हरनरायण गुप्ता एवं माता स्व0 श्रीमती मीरा देवी की स्मृति में	1,00,000
6	श्रीमती कृष्णा कान्ता पुत्री स्व0 साहू काशीनाथ मित्तल, बरेली द्वारा अपने पति स्व0 डा0 राजेन्द्रनाथ अग्रवाल जी की स्मृति में	1,00,000
7	श्री अनिल चन्द्र मित्तल बीसलपुर द्वारा अपनी पत्नी (पूर्व) स्व0 श्रीमती नीलम मित्तल की स्मृति में	1,00,000
8	श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता प्रकाश डेरी वाले, अलवर	1,00,000

बाल-साधना-शिविर-2024

शिविर स्थान : स्वामी रामानन्द साधना-धाम,
संन्यास रोड, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

समय : 8 जून से 12 जून 2024 प्रातः तक

कुछ वर्षों से ग्रीष्मावकाश में बाल-साधना शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य है बालकों का आध्यात्मिक, चारित्रिक एवं शारीरिक विकास करना। पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी की साधना पद्धति की सरल ढंग से जानकारी दी जायेगी एवं व्यावहारिक साधना के अन्तर्गत व्यावहारिक ज्ञान दिया जायेगा। शिविर में जाप का आवाहन, गीता पाठ, भजन एवं गोष्ठी का संचालन बालकों के द्वारा ही होगा अतः तैयारी करके आयें। प्रातः भ्रमण, खेल व योग के कार्यक्रम भी होंगे।

आवश्यक सामग्रीः अपने पहनने के आवश्यक कपड़े, तौलिया, टूथपेस्ट व ब्रश, कंघा, साबुन, भ्रमण के लिये जूते, कापी, पैन एवं पेन्सिल।

बिस्तर एवं बर्तनों की व्यवस्था साधना-धाम की ओर से होगी।

कृपया अपने आने की सूचना 15 दिन पूर्व साधना-धाम में व्यवस्थापक महोदय को पत्र या फोन द्वारा अवश्य दें। (फोनः 01334-311821, मोबाइलः 08273494285)

प्रतियोगितायें

बच्चों को तीन ग्रुपों में बाँटा जाएगा।

1. पहला ग्रुप 7 वर्ष से 10 वर्ष तक के बच्चे – शिक्षाप्रद कहानियाँ।
2. दूसरा ग्रुप 11 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चे – सन्तों की कहानियाँ एवं संस्मरण।
3. तीसरा ग्रुप 15 वर्ष से 20 वर्ष के बालक व बालिकायें – दिये गये विषय पर सामूहिक चर्चा (Group Discussion)।

श्री गुरु पूर्णिमा साधना शिविर-2024

(16 जुलाई से 21 जुलाई 2024 तक)

शिविर स्थान:

स्वामी रामानन्द साधना धाम, संन्यास रोड, कनखल (उत्तराखण्ड)

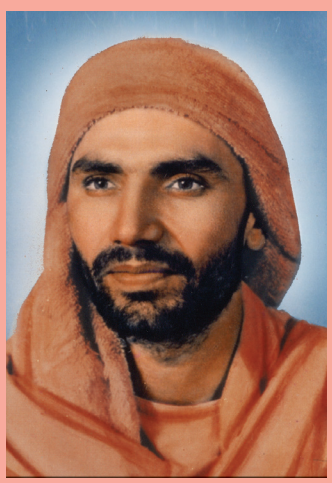

16 जुलाई 2024 को गुरु पूर्णिमा का शिविर आरम्भ होगा।

19 जुलाई की सन्ध्या से 21 जुलाई की प्रात: तक 36 घण्टे का अखण्ड जाप होगा। 21 जुलाई को गुरु पूर्णिमा हर्षोल्लास के साथ मनाई जायेगी।

साधना परिवार की कार्यकारिणी की बैठक 20 जुलाई 2024 को प्रात: 10:30 बजे धाम के कार्यालय में होगी।

साधना-शिविर में भाग लेने वाले साधक कृपया अपने आने की सूचना 15 दिन पूर्व मैनेजर साधना-धाम को टेलीफोन या पत्र द्वारा अवश्य देने का कष्ट करें।

श्रीमद्भागवत कथा

(22 से 28 जुलाई 2024)

कथा-वाचक - **धाम के पुजारी पण्डित योगेश जी**

कथा स्थल - स्वामी रामानन्द साधना धाम, संन्यास रोड, कनखल, हरिद्वार

समय - प्रात: 09:00 से 12:00 बजे तक

अपराह्न 3:00 से 6:00 बजे तक

आप सभी से अनुरोध है कि श्रीमद्भागवत कथा का रसास्वादन करके अपना जीवन सफल बनायें।

श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य

1.	अध्यात्म विकास	इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी ने अपनी विकासवादी नवीनतम साधना पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है।
2.	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)	
3.	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)	
4.	Evolutionary Outlook on Life	
5.	Evolutionary Spiritualism	
6.	जीवन-रहस्य तथा उत्पादिनी शक्ति	काम शक्ति तथा अध्यात्म विषय पर स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
7.	गीता विमर्श	श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम 7 अध्यायों की स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
8.	व्यावहारिक साधना	पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित तीन लेखों – (1) साधकों के लिये, (2) दम्पत्ति के लिये, (3) माता-पिता के प्रति का संकलन
9.	कैलाश-दर्शन	पूज्य स्वामी जी ने कुछ साधकों के साथ कैलाश-पर्वत की यात्रा व परिक्रमा की थी। उस यात्रा का एवं उनकी आत्मानुभूति का विशद् वर्णन
10.	गीतोपनिषद	श्रीमद्भगवद्गीता के आठ से अठारह अध्याय तक स्वर्गीय श्री के.सी. नैयर जी द्वारा व्याख्या
11.	हमारी साधना	श्री पुरुषोत्तम भटनागर द्वारा सम्पादित
12.	हमारी उपासना	
13.	साधना और व्यवहार	
14.	अशान्ति में	
15.	मेरे विचार	
16.	As I Understand	
17.	My Pilgrimage to Kailash	
18.	Sex and Spirituality	जीवन-रहस्य (प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तकें)
19.	Our Worship	हमारी साधना
20.	Our Spiritual Sadhana Part-I	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
21.	Our Spiritual Sadhana Part-II	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
22.	स्वामी रामानन्द-एक आध्यात्मिक यात्रा	स्वस्पष्ट प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना
23.	पत्र-पीयूष	कु. शीला गौहरी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के पत्रों का संकलन
24.	स्वामी रामानन्द-चरित सुधा	स्व. डा. कविराज नरेन्द्र कुमार एवम् वैद्य श्री सत्यदेव
25.	स्वामी रामानन्द-वचनामृत	श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव की पुस्तकों से संकलन
26.	मेरी दक्षिण भारत-यात्रा	पूज्य सुमित्रा माँ जी द्वारा दक्षिण भारत यात्रा का रोचक वर्णन
27.	पत्तियाँ और फूल	भजन, पद, कीर्तन, आरती आदि का संकलन
28.	दैनिक आवाहन विधि	स्वामी जी की साधना प्रणाली पर आधारित – श्रीमती महेश प्रकाश
29.	Letters to Seekers	कु. शीला गौहरी एवं श्री विजय भण्डारी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के अंग्रेजी पत्रों का संकलन
30.	आत्मा की ओर	
31.	जीवन विकास – एक दृष्टि	Evolutionary Outlook on Life का हिन्दी अनुवाद
32.	विकासात्मक अध्यात्म	Evolutionary Spiritualism का हिन्दी अनुवाद
33.	गुरु के प्रति निष्ठा	तेजेन्द्र प्रताप सिंह
34.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 1)	अनाम साधिका
35.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 2)	
36.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 3)	
37.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 4)	
38.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 5)	
39.	श्रीराम भजन माला	श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल 'राम सरन'
40.	माँ का भाव भरा प्रसाद गुरु का दिव्य प्रसाद	मीरा गुप्ता
41.	पत्र-पीयूष सार	पत्र-पीयूष का संग्रहीत संस्करण
42.	गीता पाठ	
43.	गृहस्थ और साधना	
44.	प्रभु दर्शन	
45.	प्रभु प्रसाद मिले तो	
46.	गीता प्रवेशिका	हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में गीता का संग्रहीत संस्करण – रमेश चन्द्र गुप्त